Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 09 30 सितम्बर, 2021 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

किसान करे ताऊ देवीलाल की पुकार

(25 सितंबर 108वें जन्मदिन पर विशेष)

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

चौधरी देवी लाल का जन्म हरियाणा के सिरसा जिले के छोटे से गांव तेजा खेड़ा में 25 सितंबर 1914 को हुआ तो धरती की आत्मा किसान आत्मा के रूप में प्रकट हुई। लेकिन हलास 6 अप्रैल 2001 को यह किसान आत्मा धरती में विलीन हो गई, तभी से बेसहारा–बेचारा किसान अपने हितों के लिए दर दर की ठोकर खा रहा है।

आज असहाय अन्नदाता की बेरुखी सर्वविदित है। विशेष तौर से नवंबर 2020 से लगातार दमनकारी सरकारी कार्यवाही व बर्बरता पूर्वक पुलिस बल प्रयोग से शांतिपूर्वक आंदोलन कर रहे किसानों के हितों व आवाज का गला दबाया जा रहा है और 600 से अधिक किसान सरकारी बेरुखी, मौसम की मार व पुलिस बर्बरता के कारण अपनी जान गवा चुके हैं। हरियाणा सरकार ने तो संयुक्त किसान मोर्चा को अपराधिक घोषित कर दिया है और शांतिपूर्वक आंदोलन कर रहे किसानों पर देशद्रोह के मुकदमे दर्ज किए जा रहे हैं। 28 अगस्त 2021 को करनाल में एसडीएम द्वारा शांतिपूर्वक प्रदर्शन कर रहे किसानों पर लाठीचार्ज करने व सिर फोड़ने के आदेश देना सर्वथा सरकारी शह पर तानाशाही व तालीबानी फरमान है और हरियाणा में हिसार, सिरसा, करनाल, पीपली रोहतक आदि अनेक स्थानों पर किसानों पर बर्बरता पूर्वक पुलिस बल प्रयोग द्वारा किसान की आवाज को दबाया जा रहा है। लाठी –गोली की मार से अपने जख्मों से कराहाता हुआ अन्नदाता बार–बार ताऊ देवीलाल को पुकार रहा है, क्योंकि उसके दर्द व आवाज को सुनने वाला कोई नहीं है। जबकि ताऊ देवीलाल सत्ता में होते हुए भी किसान के दुःख में शरीक होने के लिए संघर्ष में कूद पड़ते थे।

चौधरी देवीलाल हरियाणा के महान सुपुत्र थे। वे भूमिपुत्र, उपेक्षित वर्ग, किसानों एवं श्रमिकों के मसीहा थे। देवीलाल हरियाणा की जनता के हृदय सम्राट, बेताज बादशाह, जननायक, राजनीतिक योद्धा, हरियाणा के हीरे, किसानों के हर दिल अजीज, भारत के रत्न, आधुनिक भारतीय राजनीति के भीष्म पितामह, युगपुरुष, लोहपुरुष, संघर्ष के प्रतीक एवं त्यागमूर्ति थे। करोड़ों लोगों के द्वारा पूजनीय होने के कारण चौधरी देवीलाल को जनता सम्मान पूर्वक ताऊ के नाम से संबोधित करती है। वह हरियाणा के निर्माताओं में अग्रणी थे। राजनीति में वह छोटे से प्रदेश हरियाणा के मुख्यमंत्री से भारत के उप प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हुए।

ताऊ देवीलाल को फारसी, उर्दू, हिंदी व अंग्रेजी का व्यवहारिक ज्ञान था। उनकी कुश्ती, घुड़सवारी एवं तैराकी में विशेष रूचि थी। खेल में रुचि होने के कारण इनमें सहिष्णुता, साहस, संघर्ष एवं नेतृत्व की भावना विकसित हुई और कालांतर में राजनीति को खेल मानने के कारण उनमें नेतृत्व की अनोखी प्रतिभा, निपुणता एवं संघर्ष करने की अभूतपूर्व एवं अतुलनीय गुणवत्ता विद्यमान थी। देवीलाल ने स्वयं इस बात को स्वीकार करते हुए कहा कि खेलों के कारण ही उनको लोगों की अगुवाई करने की प्रेरणा मिली और गांधीवादी एवं साम्यवादी तथा क्रांतिकारी आंदोलन से प्रभावित होकर चौधरी देवीलाल बाल्यकाल में ही संघर्ष की राह पर चल पड़े, जो आगे चलकर उनके संघर्षशील राजनीतिक सफर का मार्गदर्शक बनी।

दिसंबर 1929 में देवीलाल ने कांग्रेस पार्टी के लाहौर अधिवेशन में स्वयं सेवक के रूप में भाग लिया। जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में 12 मार्च 1930 को ऐतिहासिक दांडी यात्रा प्रारंभ हुई और नमक बनाकर ब्रिटिश सरकार को चुनौती दी गई तो देवीलाल को बगावत के कारण 8 अक्टूबर 1930 को सेंट्रल जेल हिसार में बंद किया गया तथा 4 जनवरी 1931 को बोरस्टम जेल, लाहौर जो अब पाकिस्तान में है, में भेजा गया तथा वह लगभग 10 महीने जेल में रहे। युवा देवीलाल की यह प्रथम जेल यात्रा उनके राजनीतिक जीवन का मील का पत्थर एवं प्रथम महान कदम था। देवीलाल के मन, विचारों एवं चिंतन पर भारत माता के महान सपूतों की कुर्बानी का अमिट प्रभाव पड़ा और वह पक्के राष्ट्रवादी एवं विद्रोही बन गए। यद्यपि देवीलाल क्रांतिकारी चिंतन से प्रभावित थे, परंतु उन्होंने राजनीतिक संघर्ष में गांधीवादी परिपेक्ष का परित्याग नहीं किया।

सन् 1946–47 में भारत में सांप्रदायिकता की भावना एवं सांप्रदायिक हिंसा अपनी चरम सीमा पर थी। ऐसी स्थिति में देवीलाल राष्ट्रीय नेतृत्व एवं भारत के सर्वश्रेष्ठ एवं महान राष्ट्रीय नेताओं जवाहर लाल नेहरू तथा महात्मा गांधी की भांति शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

एक चट्टान की तरह अडिग एवं सुदृढ़ होकर पीड़ित लोगों की सेवा में लगे रहे और सांप्रदायिक हिंसा को बढ़ने से रोका तथा मुसलमानों को पाकिस्तान जाने और हिंदुओं तथा सिखों को भारत में आने एवं शरणार्थी शिविरों को स्थापित करने में सहायता की। यही कारण है कि सिख धर्म के अनुयायियों में देवीलाल का नाम बड़े सम्मान एवं गर्व के साथ लिया जाता है।

जमीदारी व्यवस्था के विरुद्ध अपने गांव चौटाला में मुजारा आंदोलन प्रारंभ किया। देवीलाल को 500 कार्यकर्ताओं के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। जनता के दबाव के कारण पंजाब के मुख्यमंत्री गोपीचंद भार्गव की सरकार को मुजारा अधिनियम में संशोधन करना पड़ा तथा देवीलाल को सितंबर 1950 में जेल से रिहा करना पड़ा। परिणाम स्वरूप देवीलाल किसान नेता के रूप में भारतीय राजनीतिक पटल पर निरंतर अग्रसर होते चले गए। पंजाब विधानसभा में मुजारों के अधिकारों के लिए निरंतर संघर्ष करके सन 1953 में मुजारा अधिनियम बनवाने में सफलता प्राप्त की।

ताऊ देवीलाल ने जब यह अनुभव किया कि हिंदी भाषी क्षेत्र हरियाणा आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, बिजली, औद्योगिक, तकनीकी, कृषि सिंचाई, सड़क, परिवहन, स्वास्थ्य, पशुपालन इत्यादि क्षेत्रों में पंजाबी भाषी क्षेत्र पंजाब के मुकाबले सरकारों की भेदभाव पूर्ण एवं पक्षपातपूर्ण नीतियां, योजनाओं एवं कार्यक्रमों के कारण पिछड़ेपन का शिकार है तो उन्होंने पंजाब विधानसभा के अंदर एवं बाहर इन अन्याय पूर्ण एवं पक्षपातपूर्ण नीतियों का विरोध ही नहीं किया, अपितु सन् 1962 के उपचुनाव में कांग्रेस पार्टी के टिकट वितरण में भेदभाव पूर्ण एवं अन्यायपूर्ण नीति के कारण कांग्रेस पार्टी को छोड़कर हरियाणा लोक समिति का निर्माण किया और सन् 1962 के निर्वाचन में फतेहाबाद निर्वाचन क्षेत्र से विजय प्राप्त की और विधायक बने तत्पश्चात् हरियाणा संघर्ष समिति के हरियाणा राज्य की स्थापना के लिए आंदोलन चलाया। हरियाणा राज्य की स्थापना के लिए आंदोलन में देवीलाल की अग्रणी भूमिका रही। उनके अथक प्रयासों एवं जनसंपर्क के कारण फरवरी 1987 में कांग्रेस पार्टी को हरियाणा विधानसभा की 81 सीटों में से 48 सीटें मिली। देवीलाल त्यागमूर्ति के रूप में जाति व्यवस्था की सीमाओं को लांघ कर सोचते थे। उन्होंने कांग्रेस विधायक दल के नेता के रूप में संसद सदस्य दलबीर सिंह दलित वर्ग के नाम का प्रस्ताव रखा, परन्तु कांग्रेस पार्टी की हाईकमान के द्वारा भगवत दयाल शर्मा को 10 मार्च 1967 को मुख्यमंत्री बनाया गया। आपातकाल के दौरान भी हरियाणा के इस महान नेता को 19 मास तक नजरबंद रखा गया। आपातकाल की समाप्ती के बाद सन् 1977 में चौ० साहब फिर जनता के बीच आए और सारे भारत का भ्रमण करते हुए विभिन्न राजनैतिक पार्टियों को एक मंच पर इकट्ठा करके तत्कालीन केंद्रीय सरकार की किसान व मजदूर विरोधी नीतियों का पर्दाफास करके केंद्रीय स्तर पर जनता पार्टी की सरकार का गठन करवाने में कामयाब हुए। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, उड़ीसा तथा बिहार में किसान हितैषी मुख्यमंत्रियों को स्थापित करवाया।

किसान के लिए उनका हृदय सदा धड़कता रहा। कर्ज, मर्ज और गर्ज से दबे किसान को उसके उत्पाद का उचित रेट–वेट–डेट मिले, के प्रबंध उन्होने किए। जैसा कि 'भ्रष्टाचार बंद, पानी का प्रबंध' किसान को उत्तम किस्म के बीज, खाद, दवा और तकनीक मिले और उसके उत्पाद का उचित दाम मिले। चौधरी साहब ने कीटनाशक रहित कृषि को बढ़ावा दिया। अब 35 लाख एकड़ से भी अधिक भूमि पर कीट नाशक रहित कृषि हो रही है। मित्र कीटों पर अध्यापन और अनुसंधान के वे संदेशवाहक रहे। चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय के माध्यम से इस दिशा में अनुसंधान की प्रथा को बढ़ावा दिया और आज यह विश्वविद्यालय किसान विकास की ओर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

एक सफल एवं सुयोग्य मुख्यमंत्री एवं उप प्रधानमंत्री के रूप में देवीलाल ने जनता विशेष रूप से किसानों, श्रमिकों, दलितों तथा उपेक्षित के लिए असंख्य जनहित योजनाओं का क्रियान्वयन किया। इन योजनाओं एवं कार्यक्रमों में किसानों एवं श्रमिकों को बैंकों से मिलने वाले ऋण पर ब्याज कम करना, मैचिंग ग्रांट, काम के बदले अनाज बेरोजगारी भत्ता, वृद्धावस्था पर सम्मान पेंशन, स्वतंत्रता सेनानियों की पेंशन में वृद्धि तथा सम्मान पत्र देकर सम्मानित करना, विकलांगों एवं विधवाओं की पेंशन में वृद्धि विकलांगों व पुलिसकर्मियों के लिए खिलाड़ी कोटे में 3 प्रतिशत आरक्षण, बाढ़ से बचाव के लिए रिंग बांधों के निर्माण पर बल तथा सस्ती दरों पर बीज खाद व दवाइयां, फसलों के उचित दामों का निर्धारण, किसानों को सस्ते दरों एवं प्राथमिकता के आधार पर बिजली की आपूर्ति, विद्यार्थियों के लिए नाम मात्र किराए पर बस सुविधा, अनुसूचित जाति तथा पिछड़े वर्गों का

कर्जा माफ करना, गांव में चौपालों का नवनिर्माण, हरिजन महिलाओं की सहायता, मुक्त द्वार प्रशासन, खानाबदोशों के बच्चों को शिक्षित करने के लिए उन्हें स्कूलों में उपस्थित होने पर प्रतिदिन प्रति बच्चा एक रूपये प्रोत्साहन देने की योजना इत्यादि मुख्य हैं।

इसके अतिरिक्त उन्होने काश्तकारों व छोटे दुकानदारों को बैंकों से सस्ते ब्याज पर ऋण उपलब्ध करवाने व कृषि के लिए बिजली, पानी, उत्तम बीजों, उर्वरकों को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध करवाने तथा प्राकृतिक प्रकोपों से फसल नष्ट होने पर किसानों व काश्तकारों को उचित मुआवजा दिलवाने की व्यवस्था करके कृषि व इससे संबंधित कार्यों पर आधारित लगभग 80 प्रतिशत ग्रामीण जन संख्या के जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास किया। किसान के खेत के चारों तरफ सामाजिक वानिकी के वे कर्णधार थे ताकि किसान की फसल का नुकसान भी ना हो और वृक्षों से अतिरिक्त आय भी हो सके बल्कि किसान के खेत के साथ लगे सरकारी वृक्षों से छाया की वजह से किसान को हो रहे नुकसान की भरपाई के लिए उन्होने वृक्ष की आमदन में आधा हिस्सा किसान को दिलवाया था। इन कल्याणकारी योजनाओं को आज सारे राष्ट्र में लागू किया जा रहा है।

उनका मानना था कि गांवों के विकास के बिना राष्ट्र तरक्की नहीं कर सकता क्योंकि शहरों की समृद्धि का मार्ग गांवों से होकर गुजरता है। इसलिए अपने शासनकाल में ग्रामीण मजदूर व काश्तकारों के साथ अन्याय नहीं होने दिया परंतु विडंबना है कि आज की सत्तासीन राज्य व केंद्रीय सरकार की गरीब–मजदूर व किसान विरोधी नीतियों के कारण इस वर्ग की हालत काफी दयनीय हो गई है जिसकी किसी भी राजनेता तथा प्रशासन को सुध लेने की फुरसत नहीं है।

वास्तव में चौ० देवीलाल एक ऐसी शख्सीयत थे जो किसी भी प्रकार की प्राकृतिक व राष्ट्रीय आपदा के दौरान स्वंय जनता जनार्धन के बीच पहुंचकर उनके दुखों को बांटते थे। वर्ष 1977–79 के दौरान आई बाढ़ में ग्रामीण जनता व बाढ़ पीड़ितों की रक्षा के लिए प्रदेश का मुख्यमंत्री होते हुए स्वंय बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में जाकर सिर पर मिट्टी का टोकरा उठाकर जनता को अपनी रक्षा करने के लिए प्रेरित किया। सन् 1978 में पहली बार ओलावृष्टि से बर्बाद हुई किसान की फसल का 400 रूपये प्रति एकड़ की दर से मुआवजा देकर काश्तकार व इससे जुड़े वर्गों को राहत पहुंचाने का कार्य शुरू किया, इसलिए आज चौ० देवीलाल जैसी शख्सीयत की अत्यंत आवश्यकता है जो जनता की समस्याओं को समझते हुए व्यक्तिगत तौर से रूचि लेकर उनके समाधान के लिए सुचारू कार्यक्रम निर्धारित कर सके।

चौ० देवीलाल का राजनैतिक जीवन एक खुली किताब की तरह पारदर्शी रहा है। उन्हे जोड़–तोड़ की राजनीति से सख्त नफरत थी। उनका मानना था कि राजनीति में भ्रष्टाचार एक विष की तरह है जो लोकतंत्र पर प्रहार होता है। अपनी ईमानदारी एवं निर्भिकता के वे कारण बड़े से बड़े राजनेताओं का विरोध करने से भी नहीं हिचकिचाए। उनका मानना था कि जब तक हमारी संसद एवं विधानसभा में सिद्धांतवादी, कर्त्तव्यनिष्ठ, निर्भिक, निर्लोभी व समर्पित व्यक्तित्व नहीं प्रवेश करेगें तब तक संसद की संपूर्ण कार्यवाही कुछ व्यक्तियों तक ही सीमित रहेगी और लोकतंत्र के स्थान पर निरंकुशता बढ़ती रहेगी। वे जनता के मन से डर निकालकर उन्हे अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करना चाहते थे।

चौ० देवीलाल एक महान त्यागी व तपस्वी व्यक्तित्व के धनी थे। इसका जीता जागता उदाहरण यह है कि एक प्रभावशाली, कुशल राजनीतिज्ञ तथा सफल नेतृत्व के धनी होते हुए भी उन्होने दो बार अपने सिर से प्रधानमंत्री का ताज उतार दिया और स्वंय इसी ताज को श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह व चंद्रशेखर के सिर पर रख दिया। उनके इस महान त्याग की भावना से आज उनके विरोधी भी मात खा रहे हैं। ऐसा उदाहरण भारतवर्ष के इतिहास में शायद ही देखने को मिलेगा। चौ० देवीलाल ने सदैव राजनेताओं के लिए लोकलाज के आदर्श पर आचार संहिता स्थापित करने पर बल दिया ताकि राजनीति में अनैतिकता को रोका जा सके। वे हमेशा कहते थे मैं कभी भी सत्ता के पीछे नहीं भागा क्योंकि मैं हमेशा ऐसे लोगों के साथ रहा हूं जो सत्ता से बाहर रहकर भी अपनी न्यायोचित मांगों के लिए संघर्षरत रहे हैं। इसीलिए ताऊ देवीलाल ने सतलुज यमुना लिंक नहर के मुद्दे पर 14–08–1985 को सात अन्य विधायकों के साथ विधानसभा से इस्तिफा दे दिया और 1987 में पुनः चुने गए।

चौधरी देवीलाल का राजनीतिक संघर्ष किसी विशेष जाति अथवा विशेष क्षेत्र की अपेक्षा सर्वसाधारण जनता के हितों की सुरक्षा एवं समृद्धि के लिए था। उनके जीवन में सदैव स्वार्थ की अपेक्षा जनता के हितों और जनमत की

झलक प्रकट होती है क्योंकि उनकी इस बात में गहरी आस्था थी कि लोक राज लोक लाज से चलता है और वे अपने मूल्यों, आदर्शों तथा सिद्धांतों पर बाल्यवस्था से जीवन के अंतिम क्षणों तक अडिग रहे। उनकी कथनी एवं करनी में कोई अंतर नहीं था।

आज आवश्यकता है कि ताऊ देवीलाल की नीतियों व सिद्धांतों का अनुशरण किया जाए। इससे सरकारी नीति व कार्यशैली निर्धारण में मदद मिलेगी। चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निश्छल राजनीति से प्रेरणा लेकर प्रशासनिक व राजनैतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की नितांत आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब–मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ–साथ स्वच्छ प्रशासन के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर ग्रामीण गरीब–मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्कता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सकें तभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का एक स्वावलंबी व स्वस्थ ग्रामीण समाज का सपना पूरा किया जा सकता है।

चौधरी देवीलाल वास्तव में एक जननायक थे। जनसाधारण की यह भावना है कि ताऊ देवीलाल को भारत रत्न से सम्मानित किया जाना चाहिए। हरियाणा की जनता को उसके लिए आंदोलन करना चाहिए, ताकि ताऊ देवीलाल को राष्ट्र के द्वारा भारतरत्न प्राप्त राजनेताओं की श्रेणी में स्थान प्राप्त हो सके।

लेखक 1977 से 1979, 1987 से 1989 तथा अगस्त–सिंतबर 1999 से 2001 तक चौधरी साहब के नजदीकी प्रशासनिक अधिकारी तथा पुलिस प्रमुख (गुप्तचर विभाग) रहे हैं।

डॉ0 महेंद्र सिंह मलिक
आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति एवं
जाट सभा, चंडीगढ व पंचकुला

विकास पुरूष चौ. बंसीलाल

– डॉ० आर० के० राणा

चौ० बंसीलाल हरियाणा प्रान्त के तीसरे मुख्यमंत्री थे। उनको हरियाणा के निर्माता व विकास पुरूष के नाम से जाना जाता है। उनका जन्म गांव गोलागढ़, जिला भिवानी, हरियाणा में एक साधारण किसान परिवार में 26 अगस्त 1927 को चौ० मोहर सिंह के घर में हुआ। उनकी प्राथमिक पढ़ाई गांव के स्कूल में ही हुई थी। घर व खेती–बाड़ी के कामकाज में व्यस्त होने के कारण बी.ए. की पढ़ाई उन्होंने प्राइवेट तौर पर की थी। उच्च शिक्षा उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय लॉ कॉलेज जालन्धर से वर्ष 1956 में एल.एल.बी. की डिग्री प्राप्त की। चौ० बंसीलाल ने अपना जीवन एक वकील, समाजिक कार्यकर्ता व राजनीतिज्ञ के तौर पर भिवानी से ही शुरू किया। वर्ष 1943–44 में वे लोहारू प्रजा मंडल के सचिव बने और स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया। वर्ष 1957–58 में वह भिवानी बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रहें। वर्ष 1958–62 तक पंजाब कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे और हिसार जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधान भी रहे। वह आम जनता व किसानों के संपर्क में रहते थे और उनकी समस्याओं को समझते थे।

चौ० बंसीलाल की उपलब्धियों में उनका हरियाणा राज्य में कई बार मुख्यमंत्री बनना व केन्द्र सरकार में मंत्री बनना रहा, जो इस प्रकार हैः–

हरियाणा के मुख्यमंत्री

चौ० बंसीलाल वर्ष 1968, 1972, 1986 और 1996 में चार बार हरियाणा प्रांत के मुख्यमंत्री बने। हरियाणा प्रांत नवम्बर 1, 1966 को बना था और प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री भगवत दयाल शर्मा व दूसरे मुख्यमंत्री राव बिरेन्द्र सिंह थे और चौ० बंसीलाल तीसरे मुख्यमंत्री बने। पहली बार 31 मई 1968 से 13 मार्च 1972 तक, दूसरी बार 14 मार्च से 30 नवम्बर 1975 तक, तीसरी बार 5 जून 1986 से 19 जून 1987 व चौथी बार 11 मई 1996 से 23 जुलाई 1999 तक। वह राज्य विधान सभा में वर्ष 1967, 1968, 1972, 1986, 1991, 1996 व 2000 में प्रत्याशी चुने गए।

सांसद सदस्य व केन्द्रीय मंत्री

चौ० बंसीलाल कई बार सांसद व केन्द्रीय मंत्री भी रहे। राज्य सभा सदस्य 1960–66 व 1976–80 तक रहे। रक्षा मंत्री दिसम्बर 1975 से मार्च 1977 तक रहे। वह रेल मंत्री व ट्रांसपोर्ट मंत्री दिसम्बर 1984 से मई 1986 तक रहे। वह पार्लियामेंट व पब्लिक कमेटी के वर्ष 1980–82 तक चेयरमैंन रहे व वर्ष 1982–84 तक ऐस्टीमेट कमेटी के चेयरमैन रहे। वह लोकसभा के सदस्य वर्ष 1980–84, 1985–86 व 1989–91 तक रहे।

विदेश यात्रा

उन्होंने मुख्यमंत्री व सांसद तथा केन्द्रीय मंत्री रहते हुए कई विदेश यात्राएं की जिनमें बर्मा, अफगानिस्तान, मॉरिशस, तन्जानियां, कुवैत, युनान, जर्मनी, हॉलैण्ड, बेल्जियम, फ्रांस, इटली, ब्रिटेन, सोवियत रूस व इजरायल शामिल हैं।

सांसद सदस्य व केन्द्रीय मंत्री

जब हरियाणा प्रांत 1 नवम्बर, 1966 को पंजाब से अलग हुआ तो उस समय यह एक पिछड़ा क्षेत्र था। आधे उत्तरी क्षेत्र में तो नहरें थी और जलवायु भी आर्द्र थी, मिट्टी उपजाऊ थी, जिससे फसल उत्पादन अच्छा था। परन्तु आधा दक्षिणी हरियाणा सूखा था, नहरें नहीं थी, पानी के साधन भी नहीं थे, जलवायु शुष्क थी, रेत के टिब्बे थे व आंधियां चलती थी और खेती वर्षा पर ही निर्भर थी। इस कारण फसल उत्पादन बहुत कम होता था। इस तरह किसानों की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी। अन्य संसाधनों में भी हरियाणा क्षेत्र बहुत पिछड़ा हुआ था। इस तरह हरियाणा को शीघ्र चहुमुंखी विकास की आवश्यकता थी। ऐसे में चौ० बंशीलाल जैसे कर्मठ, दृढ़ निश्चयी, मेहनती, ईमानदार, कुशग्र बुद्धि, साहसी, दूरदर्शी व कुशल प्रशासक की लीडरशिप की अत्यंत जरूरत थी जो इस नये राज्य को विकास पथ पर ले जा सके व देश के अग्रणी व प्रगतिशील राज्यों के बराबर खड़ा हो सके। उन्होंने हरियाणा राज्य में एक कुशल प्रशासन की संस्कृति की नींव रखी।

ऐसे नेतृत्व का वहन करने का सौभाग्य चौ० बंशीलाल को प्राप्त हुआ। उन्होंने एक स्थाई सरकार का गठन किया। पार्टी की तरफ से पूरा समर्थन मिला व केन्द्र सरकार से पूरा सहयोग मिला। राज्य के कांग्रेस अध्यक्ष चौ० सुल्तान सिंह व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का उनको पूरा समर्थन था। वर्ष 1968 से 1975 तक चौ० बंशीलाल ने विकास कार्यों की झड़ी लगा दी। उन्होंने हर क्षेत्र में काम को गति दी। चौ० बंशीलाल ने मूलभूत समस्याओं को समझा। उनमें निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता थी। उन्होंने हर विभाग को नई विकास योजनाओं को तैयार करने को कहा और बजट का प्रबन्ध किया। सबसे पहले उन्होंने हर विभाग में आवश्यकता अनुसार अच्छे कर्मठ व्यक्तियों की भर्ती की। पुलिस विभाग को चुस्त–दुरूस्त बनाया और सभी सुविधाएं प्रदान की ताकि राज्य में कानून व्यवस्था ठीक हो और जनता निडर होकर कार्य कर सके। उन्होंने हर शहर व गांव को सड़क से जोड़ा, रोड़वेज विभाग को आधुनिक बस अड्डे बनवाकर मिसाल कायम की। गांव में बिजली का प्रबन्ध किया, हर गांव में पीने को स्वच्छ पानी, स्वास्थ्य सेवाएं व विद्यालयों का प्रबंध किया। गांवों में गलियां पक्की कराई गई। खेतों में पानी पहुंचाने के लिए नहरों का प्रबंध किया व नहरें व नालियां पक्की कराई।

दक्षिणी हरियाणा के टीलों में पानी पहुंचाने के लिए उन्होंने लिट सिंचाई योजना बनाई। इस परियोजना में अमेरिका से पढ़े इंजीनियर श्री के.एस.पाठक का विशेष योगदान रहा। भाखड़ा कैनाल ये लिट योजना लगभग सौ फुट पानी ऊंचा उठाया गया व सिवानी जुई, लोहारू, जे.एल. नेहरू आदि नहरों से ऊंचे टीबों के क्षेत्र में लाखों एकड़ सूखी, रेतीली जमीनों की सिंचाई करके भरपूर फसल उत्पादन लिया। हर गांव में नलको द्वारा पीने का स्वच्छ पानी पहुंचाया। ऊंचे–नीचे खेतों में छिड़काव सिंचाई का प्रबंध कराया। हर ट्यूबबैल को बिजली उपलब्ध कराई। भारत में ऐसे पहले प्रोजेक्ट को कामयाब बनाने के लिए श्री पाठक को वर्ष 1971 में भारत सरकार ने 'पद्म श्री' की उपाधि दी। श्रीमती इंन्दिरा गांधी ने बिजली व सिंचाई परियोजनाओं का उद्घाटन करते समय कहा था कि अगर हर राज्य में चौ० बंशीलाल जी जैसे कर्मठ मुख्यमंत्री हों तो देश जल्द ही विकासशील राष्ट्र बन जाएगां।

चौ० बंशीलाल हर काम को तय सीमा में करते थे, उन्होंने जो भी विकास कार्यों की नींव रखी उसको पूरा करने का समय निर्धारित कर देते थे और तय समय में काम पूरा होने पर उद्घाटन भी करते थे। इस मरह उन्होंने सभी भवनों, रेस्ट हाऊस, रिहायसी कॉलोनी, नहरों व सड़कों पर पुल आदि बनवाएं। उन्होंने पंचकूला से अम्बाला सड़क को छः महीने में पूरा करा दिया था ताकि लोगों को अम्बाला से सीधा चण्डीगढ़ का रास्ता मिले और पंजाब के उग्रवाद का सामना ना करना पड़े। वह जब चण्डीगढ़ से दिल्ली जाते थे तो फाईलें कार में रखवा लेते थे और आते–जाते समय सभी फाईलों को निपटा देते थे ताकि सरकारी काम ना रूके। वह आधी रात तक भी सरकारी काम निपटाते थे।

उन्होंने रिकार्ड समय में हरियाणा में हर जिले में जगह–जगह टूरिस्ट कॉम्पलैक्स बनवाएं। कृत्रिम व प्राकृतिक झीलों का सौन्दर्यकरण किया, उनमें किश्तियां डलवाई ताकि पर्यटन को बढ़ावा मिले। कई जगह पशु व पक्षी विहार भी बनवाएं ताकि जनता उन्हें नजदीक से निहार सके। यह मॉडल देश में अपनी तरह का पहला था और कई राज्यों ने इसको अपनाया। उनके अधिकारी श्री एस.के. मिश्रा ने इस कार्य में बड़ा योगदान दिया था।

चौ० बंशीलाल ने हिसार शहर को विकसित करने में विशेष रूचि दिखाई। उन्होंने फौजियों के लिए डिफेंस कॉलोनी बनवाई। चण्डीगढ़ की तरह पर वहां मिनी सचिवालय व कोर्ट परिसर बनवाए। शहर की सड़के चौड़ी करवाई गई, पार्कों व खेल स्टेडियम का सुधार किया। बीज फार्म, एग्रो इण्डस्ट्री का विकास हुआ। हिसार में एक आदर्श ऑटो मार्किट बनवाई जहां हर तरह की दुकानों की सुविधा दी गई व हजारों लोगों को रोजगार भी मिला।

चौ० बंशीलाल ने कृषि को बढ़ावा देने के लिए हिसार स्थित हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का आधुनिकरण किया। यह विश्वविद्यालय 2 फरवरी 1970 को पंजाब कृषि विश्वविद्यालय से अलग हुआ था। चौ० बंशीलाल ने अपने सेवानिवृत वित्त सविच श्री ए.एललेचर को उपकुलपति बनाया। वह बड़ा कर्मठ व दूरदर्शी इंसान था। चौ० साहिब ने उन्हें कहा कि बजट खूब मिलेगा और आप विश्वविद्यालय को विश्व स्तर का बनाओं। इस विश्वविद्यालय में कृषि कॉलेज व पशुपालन, पशु चिकित्सा कॉलेज व गिरी सेन्टर, प्रशासन भवन के अलावा इंजीनियरिंग कॉलेज, बेसिक विज्ञान कॉलेज, होम साईंस कॉलेज, स्पोर्टस कॉलेज, प्रशासन भवन, नेहरू पुस्तकालय, गांधी भवन, इंदिरा गांधी ऑडीटोरियम बनवाए गए। प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक डॉ० रामधन सिंह को बोर्ड का सदस्य बनाया और उनके नाम पर जूनियर वैज्ञानिकों के लिए डॉ० रामधन सिंह को बोर्ड का सदस्य बनाया और उनके नाम पर जूनियर वैज्ञानिकों के लिए डॉ० रामधन सिंह भवन बनाया। किसानों की सेवा के लिए हर जिले में कृषि ज्ञान केन्द्रों की स्थापना कराई गई। कृषि वैज्ञानिकों की भर्ती कराई गई और हरियाणा में कृषि क्रांति का आह्वान किया।

वैज्ञानिकों ने भी भरपूर काम किया। हर फसल की नई उत्तम प्रजातियां विकसित की व नई तकनीकें विकसित की। कृषि वैज्ञानिक किसानों के खेतों में जाकर ये जानकारी देते थे और सरकार की तरफ से सभी सुविधाएं किसानों को मिलती थी। इस तरह हरियाणा कृषि उत्पादन में नये आयाम छूने लगा। हर फसल गेहूं, जौ, मक्का, धान, बाजरा, कपास, दलहन, तिलहन, गन्ना, चारा आदि फसलों में अत्याधिक उत्पादन होने लगा। इससे किसानों की आर्थिक अवस्था में सुधार हुआ और खुशहाली आई व हरियाणा का किसान देश में सबसे प्रगतिशील कहलाया। हरियाणा का खाद्यान्न लगभग दस गुणा बढ़ गया। कृषि वैज्ञानिकों को इन सफलताओं के अवार्ड भी मिले। गेहूं उत्पादकता में हरियाणा अग्रसर राज्य बन गया। हमारी गेहूं की टीम को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की तरफ से भारत में 'बेस्ट टीम' का अवार्ड वर्ष 1997 में मिला था व साथ ही हमारे विश्वविद्यालय को 'बेस्ट कृषि अनुसंधान संस्थान' का अवार्ड मिला था। इससे हमारे विश्वविद्यालय की विश्व भर में सराहना हुई।

चौ० बंसीलाल ने गीता की नगरी कुरूक्षेत्र में काफी विकास किया। श्री कृष्ण संग्रहालय को आधुनिक बनवाया। ब्रह्मसरोवर का सौन्द्रीकरण कराया। वहां पर अपने राजनीतिज्ञ रहनुमा व दो बार कार्यवाहक प्रधानमंत्री रहे माननीय गुलजारी लाल नन्दा की आदम कद मूर्ति लगवाई। कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय का विकास कराया।

इन सब विकास कार्यों के लिए कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय ने चौ० बंसीलाल को 'डाक्टर आफॅ साईंस' की उपाधि से सम्मानित किया व हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने उनको 'डाक्टर आफॅ साईंस' की उपाधि से अलंकृत किया।

चौ० बंसीलाल ने अन्य बहुत विकास कार्य किए। रोहतक में महर्षि विश्वविद्यालय की स्थापना की, मेडिकल कॉलेज का विस्तार कराया गया व सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई। हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण बनाकर कई शहरों में रिहायती सैक्टर व समुदाय केन्द्र बनवाएं। दिल्ली में हरियाणा भवन बनवाया, गुड़गांव में मारूति इण्डस्ट्री लगवाई, पानीपत में तेल रिफाइनरी बनवाई और अन्य इण्डस्ट्री भी लगवाई जिससे लाखों लोगों को रोजगार मिला व हरियाणा में हर घर में समृद्धि आई व हर हरियाणवी गर्व महसूस करने लगा। चौ० बंसीलाल ने हरियाणा को कृषि में और समृद्ध राज्य बनाने के लिए सतलुज यमुना नहर लिंक के लिए बहुत प्रयास किया।

केन्द्र सरकार में रहकर चौ० बंसीलाल ने सेना में आधुनिकरण किया, रेल सेवाओं में सुधार व आधुनिकीरण किया। भिवानी रेलवे स्टेशन को बहुत सुन्दर बनवाया। ट्रांसपोर्ट मंत्री रहते हुए देश में सड़कों का सुधार कराया। गुजरात में विशेष फोरलेन, नया हाइवे अहमदाबाद से बड़ोदरा तक बनवाया।

वायदे के पक्के चौ० बंसीलाल

चौ० बंसीलाल अपने वायदे के पक्के थे। जिस बात की हां कर लेते थे उसे पूरा करते थे। किसानों की कोई भी बिजली, पानी की मांग होती थी, उसे पूरा करते थे। हर घर में व खेत में पानी व बिजली की जरूरत पूरी करते थे। जब चौ० बंसीलाल ने लिट सिचांई परियोजना से भिवानी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी के हल्कों में मीठा पानी पहुंचाया तो लोग उनकी जय जयकार करने लगे थे। एक कवि श्री हरध्यान सिंह ने एक सभा में उनकी इस सफलता के लिए गाना गाया था तो चौ० बंसीलाल बड़े खुश हुए और उनके बारे में जानना चाहा। उसने बताया कि वह भिवानी में जिला स्तर पर पब्लिक रिलेशन में तृतीय श्रेणी का कर्मचारी है। चौ० बंसीलाल ने उसकी तनख्वाह पूछी तो उसने बताया पांच सौ रुपये महीना। चौ० बंसीलाल ने कहा कि आपको तो एक हजार रुपये तनख्वाह मिलनी चाहिये और चौ० बंसीलाल ने चण्डीगढ़ में मंत्री मण्डल की विशेष बैठक बुलाकर उसे विशेषतौर से द्वितीय श्रेणी में पदोन्नत करके एक हजार रुपये तनख्वाह दिलाई।

उनके बारे में ये कहा जाता है कि एक औरत उनसे मिलने आई जिसके पति को किसी केस में फांसी की सजा सुनाई गई थी और राष्ट्रपति के पास माफी अपील की हुई थी।

चौ० बंसीलाल ने उससे हमदर्दी दिखाई और केस के कागज दिखाने को कहा क्योंकि चौ० बंसीलाल साहब खुद एक वकील भी थे, उन्होंने केस को गौर से पढ़ा और उस महिला को मदद का आश्वासन दिया। फिर दिल्ली जाकर राष्ट्रपति जी से भेंट कर केस की अपील के बारे में दलील दी। राष्टपति जी उनसे सहमत हो गए और माफी की अपील स्वीकार कर ली। इस तरह चौ० बंसीलाल ने एक महिला से वायदा करके उसके पति की जान बचाई।

यहां मैं अपने भी कुछ संस्मरण बता रहा हूं। मेरी शादी 25 जून 1975 को डीघल गांव के सरपंच चौ० मनफूल सिंह अहलावत के घर हुई थी, जो कि चौ० बंसीलाल से अच्छे सम्बन्ध रखते थे और उन्होंने शादी में आने का निमन्त्रण दिया था जिसे चौ० बंसीलाल ने स्वीकार लिया था। मेरी बारात में मेरे गांव पाकसमा (रोहतक) के कुछ बुजुर्ग इसलिए बारात में आए थे कि वे चौ० बंसीलाल को देखना चाहते थे क्योंकि इस दिन देश की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने राजनीतिक हलचल के नाते अपने मंत्रीमंडल की आपात मीटिंग बुलवाई थी व कुछ सहयोगी मुख्यमंत्रियों को भी बुलाया था ताकि भावी राजनीतिक फैसला लिया जा सके। चौ० बंसीलाल भी उस मीटिंग में शामिल हुए थे। मीटिंग दोपहर तक चली। दसके बाद चौ० बंसीलाल चण्डीगढ़ जाने की बजाए दिल्ली से रोहतक होते हुए डीघल मेरी शादी में पहुंचे। सब ने बड़े हर्ष से उनका स्वागत किया, बुजुर्ग लोग बड़े खुश हुए उनकी इच्छा पूरी हुई। चौ० बंसीलाल हमारे साथ कुछ देर बैठे, बातें की और आर्शीवाद देकर चण्डीगढ़ के लिए चल पड़े। उसी रात को देश में आपातकालीन स्थिति घोषित हो गई थी।

दूसरी घटना 20 मार्च, 1999 की है जब चौ० बंसीलाल चौथी बार हरियाणा के मुख्यमंत्री के पद पर थे। हमने अपने गांव पाकसमा में एक कार्यक्रम में उनको व केन्द्र में श्री अटल बिहारी बाजपेई की सरकार में राज्य कृषि मंत्री श्री सोमपाल शास्त्री को बुलाया था। ये दोनों दिल्ली से ही साथ हमारे गांव आए थे, जहां पूरे गांव ने उनका हर्ष से स्वागत किया था। मैं हिसार से अपने कुलपति डॉ० जे.बी. चौधरी के साथ गांव पहुंचा था। मेरे भाई व गांव के सरपंच यादराम राणा ने सब का स्वागत किया व गांव में हुए कार्यों की जानकारी दी। जब वे नई मांगों के बारे में पढ़ने लगे तो श्री सोमपाल शास्त्री ने कहा कि ये मेरे पूर्वजों का गांव है, मांगे मैं पढूगा। इस पर चौ० बंसीलाल ने कहा फिर तो आप मांग पढ़ते जाओ और मैं हां भरता जाऊंगा और कल से ही ये कार्य शुरू हो जाएंगे। मेरा हुक्म तो गोली की तरह चलता है। वाकई वे अपने काम व इरादे के पक्के थे और काम शुरू भी हो गए। परन्तु कुछ समय बाद ही उनकी हरियाणा विकास पार्टी व भाजपा की सांझी सरकार में मतभेद हो गए और सरकार अल्पमत में आ गई। कुछ समय तक कांग्रेस के समर्थन से उनकी सरकार चली परन्तु फिर उसने भी साथ छोड़ दिया और 21 जुलाई 1999 को चौ० बंसीलाल ने त्याग पत्र दे दिया।

काश उनकी सरकार न गिरती तो न केवल हमारे गांव के विकास कार्य होते बल्कि और ऐसे हजारों गांव के विकास कार्य इस हरियाणा निर्माता और विकास पुरूष के कर कमलों द्वारा होते व भविष्य में भी उनसे ऐसी ही आशाएं थी। परन्तु शायद नीयति को ऐसा मंजूर न था। आगे वह वर्ष 2000 के चुनाव में जीते परन्तु कम सीटें आई और लोकदल की सरकार बन गई। फिर उन्होंने वर्ष 2005 में चुनाव नहीं लड़ा। परन्तु अपने बेटों श्री सुरेन्द्र सिंह व श्री रणजीत सिंह को कांग्रेस पार्टी से एम.एल.ए बनवाया।

स्वर्गवास

चौ० बंसीलाल ने जीवन भर जनता के लिए अथक प्रयास किए। वे दिन रात सेवा में लगे रहे। जनता की वाही–वाही भी मिली। कुछ हठी स्वभाव व नसबंदी तथा नशाबंदी की ज्यादतियों के कारण बुराई भी मिली, पारिवारिक परेशानियां भी झेली। सबसे बड़ा सदमा तब लगा जब उनके पुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह, जो हरियाणा के कृषि मंत्री थे। उनकी 31 मार्च 2005 को हेलीकॉप्टर दुर्घटना में मृत्यु हो गई। श्री ओ.पी. जिन्दल, ऊर्जा मंत्री भी इस दुर्घटना में मारे गए थे। इस बड़ी उम्र में वह कुछ समय से अस्वस्थ रहने लगे थे और 28 मार्च 2006 को इस भारत के लाल ने अपने निवास दिल्ली में शरीर त्याग दिया।

उनके पार्थिव शरीर को उनके पैतृक गांव गोलागढ़ में पूरे राजकीय सम्मान के साथ हजारों लोगों की उपस्थिति में अंतिम विदाई दी गई। हरियाणा के गवर्नर माननीय ए.आर. किदवाई, मुख्यमंत्री चौ० भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, केन्द्रीय रक्षा मंत्री प्रवण मुखर्जी (भूतपूर्व राष्ट्रपति) व अन्य केन्द्र तथा राज्य के मंत्री, सचिव, अधिकरी व अन्य जाने माने नेतागण उनको श्रद्धाजंलि देने पहुंचे। उनको 10 मई 2006 को संसद में श्रद्धाजंलि दी गई। लोकसभा में स्पीकर श्री सोमनाथ चटर्जी ने उनको एक बेहतर सांसद व केन्द्र में मंत्री के रूप में उनकी सेवाओं की सराहना की। राज्य सभा में सभापति श्री भैरा सिंह शेखावत ने कहा कि राष्ट्र के प्रति उनकी सेवाओं को सदा याद रखा जाएगा। दोनों सदनों में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि दी।

यादगार संस्थाएं

चौ० बंसीलाल की याद में कई संस्थाएं खोली गई हैं। उनके बारे में पुस्तकें भी लिखी गई हैं व उनकी प्रशंसा में गाने भी गाए जाते हैं।

1. उनकी याद में चौ० भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने जुई नहर का नाम वर्ष 2008 में चौ० बंसीलाल नहर रखा।
2. उनकी याद में भिवानी में राजकीय पॉलिटैक्निक संस्था बनाई।
3. भिवानी में उनकी आदमकद मूर्ति दिसम्बर 2008 में स्थापित की गई।
4. लोहारू में राजकीय कॉलेज का नाम उनके नाम पर रखा गया।
5. तोशाम में उनके नाम पर कन्या महाविद्यालय का नाम रखा गया।
6. वर्ष 2014 में उनके नाम से भिवानी में चौ० बंसीलाल विश्वविद्यालय स्थापित किया गया।
7. लाहली (रोहतक) में क्रिकेट स्टेडियम का नाम उनके नाम पर रखा गया।

उनके जीवन पर लिखी पुस्तक का विमोचन करते हुए राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़िया ने कहा कि चौ० बंसीलाल एक सच्चे इंसान व लग्नशील और मेहनती मुख्यमंत्री थे। जिन्होंने हरियाणा राज्य को एक उन्नतिशील दिशा दी। मुख्यमंत्री चो० भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने कहा कि चौ० बंसीलाल ने हरियाणा में विकास की नींव डाली व राज्य को अग्रणी श्रेणी में ला खड़ा किया। वह मेरे लिए सदा रोल मॉडल रहे और मैं भी उसी रास्ते पर चलकर हरियाणा के निर्माण कार्य में लगा हुआ हूं।

चौ० बंसीलाल ने वाकई में हरियाणा का चहुंमुखी विकास करके हरियाणा का निर्माता कहलाएं। उन्होंने गांव, किसान व कृषि विकास का उद्धार करके किसान मसीहा चौ० छोटूराम व प्रसिद्ध कृषि वैाानिक रामधन सिंह का सपना पूरा किया।

चौ० बंसीलाल (हरियाणा के लाल), पुरानी रियासत लोहारू के जनता सेवक होने के कारण व स्वभाव से हठी तथा दृढ़ इरादे वाले होने के कारण हरियाणा के लौह पुरूष कहलाए।

बाहुबली और माफिया का राजनीति के अंगना में क्या काम ?

– कमलेश भारतीय

राजनीति जनसेवा और लोकतंत्र को बनाये और बचाये रखने के लिए है न कि दूसरों को डराने या दबाने के लिए लेकिन हुआ यह कि सन् साठ के बाद से राजनीति में दबाने व विरोधी को चित्त करने के लिए बाहुबलियों या पहलवानों को राजनेता चुनावों में साथ रखने लगे। शुरूआत तो शायद सुरक्षाकर्मियों के रूप में हुई जैसे आजकल फिल्मी सितारे भी बाउंसर्ज रखते हैं। फिर उन बाहुबलियों से जो करोड़ों रूपये गलत तरीकों से कमाते थे, चंदे के रूप में लिए जाने लगे। इस तरह बाहुबलियों का दोहरा फायदा। चुनाव जनसभाओं में इनके चेहरे से डराना और मोटा चंदा बसूलना। इस तरह बाहुबलियों का प्रभाव राजनीति में बढ़ता चला गया। बिहार के पप्पू यादव को कौन नहीं जानता ? वह सीधे राजनीति में आया और राजनीति का संतुलन बनाने और संभालने लगा। कभी उसका साथ पाने के लिए राजनेता लालयित रहते थे। उत्तर प्रदेश में कभी राजा भैया का डंका बजा तो पिछले साल डॉन दूबे की कहानी सब जानते हैं। कैसे पनप जाते हैं ये बाहुबली या डॉन माफिया? राजनेताओं के सहारे के बिना ? नहीं। राजनीति के वट वृक्ष के साथ लिपट कर ही ये विष बेलें फलती फूलती हैं। जब जब चुनाव आते हैं तब तब पहलवानों की मांग राजनीति में बढ़ जाती है। क्यों ? इनका राजनीति से क्या लेना देना ? पर सारा भेद खुल चुका है। यदि पहलवानों का ऐसा दुरूपयोग होना है तो पहलवानी का क्या फायदा? तभी तो सुशील कुमार जैसा पहलवान गलत राह पर चल पड़ा।

अब बसपा सुप्रीमो और उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने घोषणा की कि हमारी पार्टी में बाहुबलियों और डॉन माफियाओं के लिए कोई जगह नहीं और कोई टिकट भी नहीं दी जायेगी। अच्छी बात है और बढ़िया पहल पर यह तो मान ही लिया कि पहले बाहुबली मुख्तार अंसारी को टिकट दी और वे विधायक भी चुने गये अपने बाहुबली होने के चलते। अब क्या पश्चाताप करने जा रही हैं ? दूसरी ओर राजनीति का कमाल देखिए कि कोई दूसरी पार्टी खुली ऑफर लेकर आ गयी कि हम अंसारी को टिकट देंगे और वह भी उनकी मनचाही सीट से। लो कर ल्यो बात,,,बहन जी घाटे में रहेंगी या फायदे में ,,,,? पर टिकट की कमी कहां बाहुबलियों को ? टिकट आपके द्वार। जहां से चाहो, वहीं से आ जाओ मैदान में और इस पार्टी ने आरोप लगाया बहन जी पर कि जब तक फायदा मिला मुख्तार अंसारी से तब तक

उसे पार्टी में रखा और जब उससे कोई उम्मीद न रही तो दूध में से मक्खी की तरह निकाल कर बाहर कर दिया। इसके बावजूद सवाल यह उठता है कि राजनीति के अंगने में बाहुबलियों का क्या काम है ?

यह नये लाइफ स्टाइल का कसूर है ?

नया लाइफस्टाइल बहुत खतरनाक स्थितियों में समाज को ले जा रहा है। रोहतक का नया कांड इसी बात का प्रमाण है। बीस वर्षीय अभिषेक उर्फ मोनू ने अपने ही मां बाप, नानी और बहन को मार डाला। सिर्फ इसलिए कि उसके दोस्त को पांच लाख रुपये देने से इंकार कर दिया मां बाप ने।

क्या इस बहुत ही मार्मिक व घिनौने कांड का दोषी सिर्फ और सिर्फ मोनू ही है ? क्या उसे संस्कार देने में कहीं मां बाप चूक तो नहीं गये ? कहीं नया लाइफस्टाइल ही तो इसका जिम्मेदार नहीं ? सुना है कि मोनू को मात्र बीस वर्ष की उम्र में कार और महंगा फोन एप्प दिया हुआ था। उसकी हर इच्छा पूरी की जाती थी और वह मनमानियां करने लगा था और जब उसकी मनमानी पूरी न हुई तो उसे सहन नहीं हुआ और उसने अपने ही परिवार के लोगों यानी आत्मीय जनों को बुरी तरह मार डाला।

क्या आपको इस कांड से बरवाला के पूर्व विधायक रेलूराम पूनिया की बेटी सोनिया द्वारा किये कांड की याद नहीं आई ? वह भी नये लाइफस्टाइल के कारण इस फैसले पर पहुंची थी कि परिवार जनों को ही मौत के घाट उतार दिया जाये जैसे नेपाल में पारस ने किया था और पूरे परिवार को डिनर टेबल पर ही मार डाला था। सोनिया वह वीडियो अनेक बार देखती रही और आखिर प्लानिंग बनाई और पति के साथ मिल कर पूरे परिवार को मार कर नृशंस कांड कर डाला। सोनिया ने दूसरे दिन बरवाला के जनता अस्पताल में मुझे बताया था की जब हमने बचपन में सौ रुपया मांगा पापा से तो पापा का जवाब होता कि नीचे स्टोर में जाओ बोरी भरी पड़ी है जितने चाहे ले लो। इसके बाद शादी में सिर्फ दस लाख रुपये दिये कम्प्यूटर सेंटर चलाने को यमुना नगर में, भला उससे मेरा क्या होता और बस पूरी जायदाद ले सकूं इसलिए यह प्लानिंग बनाई। यह है नया लाइफस्टाइल जो हमने बच्चों को दिया। ये हैं नये संस्कार जो हमने अपने बच्चों को दिये। ऐसे ही कुछ साल पहले यमुना नगर में ही एक जमा दो के छात्र ने अपनी प्रिंसिपल की स्कूल में ही हत्या कर दी थी क्योंकि उसने पापा से शिकायत की थी और वह पापा की ही पिस्तौल ले आया और प्रिंसिपल की हत्या करने में कोई देर नहीं लगाई।यह है हमारे जीने के नये स्टाइल के घातक परिणाम।

अभी अपने ओलम्पिक विजेता पहलवान सुशील कुमार की गाथा सबसे ताज़ी है जिसने अपने ही एक पहलवान सागर की बुरी तरह हत्या कर दी क्योंकि उसका लाइफ स्टाइल बदल चुका था। वह कब्जे छुड़वाने वाले गिरोह के सम्पर्क में आकर ईजी मनी बनाने के दुश्चक्र में फंस गया था। उस लाइफ स्टाइल ने उसे जेल की हवा खिला दी।

हमें अपनी नयी पीढ़ी को संस्कारवान बनाने की ओर कदम उठाने होंगे। नहीं तो पश्चिम की अंधी दौड़ कहां से कहां ले जायेगी, कह नहीं सकते। नहीं तो यही बात याद आयेगी

बोये पेड़ बबूल के, तो आम कहां से होये ,,,,

धीरे से आना जलियांवाला बाग में कभी सुभद्रा कुमारी चौहान ने एक कविता लिखी थी –जलियांवाला बाग में बसंत और उसमें फूलों से भी मनुहार की थी कि इस बाग में धीरे से आना क्योंकि यहां अनेक शहीद सो रहे हैं। लेकिन आज यह बाग नये रूप में, नयी डी जे लाइट्स के साथ सामने आया तो इसकी आलोचना शुरू होनी स्वाभाविक ही थी क्योंकि जिस बाग में शहीद सो रहे हों और आप उन्हें नमन् करने जा रहे हों, वहां भला डी जे का क्या काम ? सचमुच यह शहीदों के अपमान के बराबर है। दूसरे पर्यटकों की तरह मैं भी दो साल पहले जलियांवाला बाग देखने और नमन् करने गया था। उन दिनों इसके पुनरुद्धार का काम ज़ोरों पर चल रहा था और हमें आधा ही बाग देखने को मिला था। सोचा था कि जब यह नवीनीकरण का काम हो जायेगा तब फिर यहां आयेंगे पर इसके नवीनीकरण पर विवाद छिड़ गया और मेरी तरह हर हिंदुस्तानी का दिल टूट गया होगा।

बेशक पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरेंद्र सिंह इस बदलाव को बड़ा ही अच्छा लगा बता रहे हों और राहुल गांधी इसके विपरीत कह रहे हैं कि शहीदों की विरासत से छेड़छाड़ शहीदों का अपमान है। मैं शहीद का बेटा हूं और शहीदों का अपमान किसी कीमत पर सहन नहीं करूंगा। जिन्होंने आज़ादी की लड़ाई नहीं लड़ी वे क्या समझ सकते हैं इसे ?

यह बात भी सामने आ रही है कि प्रवेश द्वार पर लगीं नानकशाही ईंटों पर सीमेंट कर दिया गया है जो इसकी खूबसूरती खत्म कर देने के समान है उठाया गया कदम है। यही तो इसकी प्रभावशाली प्रविष्टी थी और इसे ही नवीनीकरण के नाम पर बदल दिया गया। फ्रीडम फाइटर एसोसिएशन की

ओर से भी इसके बदलाव पर आपत्ति दर्ज करवाई गयी है। यह बहुत दुखद है। इतने प्रेरणाप्रद बाग का नवीनीकरण बहुत संवेदनशील ढंग से किया जाना चाहिए था न कि कोई नयी बिल्डिंग में बदलने की कोशिश करनी चाहिए थी। फतेहगढ़ साहिब और शहीद भगत सिंह के गांव में उनके पैतृक घर के रखरखाव से प्रेरणा लेनी चाहिए थी। वहां पुरानी छोटी ईंटों की दीवारों को सुरक्षित रखा गया है और शीशे में कवर किया गया है। कुछ ऐसा ही काम यहां भी हो सकता था लेकिन संवेदनशीलता से काम नहीं किया गया। अभी कुछ बिगड़ा नहीं है। पंजाब के मुचयमंत्री को दोबारा इसको सही करने के आदेश देकर जन भावनाओं का आदर करना चाहिए। तभी सुभद्रा कुमारी चौहान की पंक्तियां सार्थक रहेंगीं।

यहां धीरे से आना, यहां शहीद की आत्माएं हैं.....।

कैप्टन मुक्त पंजाब में सिद्धू की अग्निपरीक्षा

– शंभू भद्रा, वरिष्ठ पत्रकार

दो दिन में पंजाब की राजनीति तेजी से बदली है। कांग्रेस अलाकमान के प्रति नाराजगी जताते हुए कैप्टन अमरिंदर सिंह ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। इस इस्तीफे को पंजाब कांग्रेस के नए अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू की जीत मानी जा सकती है। कैप्टन के खिलाफ बगावती मोर्चा खोलने वाले सिद्धू केवल अध्यक्ष बनने तक ही संतुष्ट नहीं रहे, बल्कि उनके खेमे ने कैप्टन जैसे दिग्गज नेता को पद छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। अब जब कैप्टन ने मैदान छोड़ दिया है तो पंजाब में कांग्रेस की सियासी पिच पर कमाल दिखाने की बारी सिद्धू की है। सिद्धू भाजपा से कांग्रेस में आए और महज चार साल में प्रदेश अध्यक्ष के पद तक आ गए, यह दिखाता है कि कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व का उन पर कितना विश्वास है। सिद्धू को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाए जाने के बाद लग रहा था कि कांग्रेस के अंदर का घमासान शांत हो गया है, लेकिन उसने अपने सहयोगियों के जरिये जिस तरह कैप्टन अमरिंदर के खिलाफ मोर्चा खोले रखा, उससे आहत अमरिंदर ने इस्तीफा देना ही उचित समझा। पंजाब में नया मुख्यमंत्री भी सिद्धू की पसंद का बनाया गया है। कांग्रेस ने दलित नेता चरणजीत सिंह चन्नी को पंजाब का नया मुख्यमंत्री बनाया है। वे राज्य के पहले दलित मुख्यमंत्री होंगे। चन्नी को सीएम बना कर कांग्रेस ने पंजाब में दलित वोट बैंक पर दांव खेला है। अभी दलित वोट बैंक के सहारे ही पंजाब में आप व बसपा राजनीति कर रही है। इसे बड़े ब्लॉक में चन्नी के सहारे कांग्रेस एंट्री का प्रयास कर रही है। चन्नी रामदासिया सिख समुदाय से हैं।

सुखजिंदर रंधावा और ओ.पी. सोनी को डिप्टी सीएम बनाया जाएगा। अमरिंदर सिंह के खिलाफ अगस्त में हुई बगावत की अगुआई करने वालों में चन्नी प्रमुख थे। उन्होंने कहा था कि 'पंजाब के मुद्दों को हल करने के लिए हमें अमरिंदर पर भरोसा नहीं रहा।' पहले सिद्धू खुद सीएम बनना चाहते थे, लेकिन वे पंजाब कांग्रेस के प्रधान हैं, इसलिए आलाकमान ने उनके नाम को हरी झंडी नहीं दी। उसके बाद सुखजिंदर सिंह रंधावा (सुक्खी) को सीएम बनाने की चर्चा सामने आई, पर उनके नाम पर सिद्धू से सहमति बन पाई। अंत में चन्नी के नाम पर मुहर लगी। चन्नी को कमान मिलने के बाद अब सिद्धू पर सौ प्रतिशत रिजल्ट देने का दबाव होगा। अमरिंदर के मुख्यमंत्रित्व काल में किसान आंदोलन के दौरान जिस तरह पंजाब में कांग्रेस की जमीन मजबूत हुई है, अमरिंदर के पद छोड़ने के बाद कांग्रेस की जमीन वैसी ही मजबूत रहेगी, इसकी कोई गारंटी नहीं है। पंजाब में कांग्रेस अब पूरी तरह सिद्धू की कप्तानी में है। पार्टी और सरकार दोनों पर उनका वरदहस्त हो गया है।

अब अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की नैया पार लगाने की जिम्मेदारी उनकी होगी। उनके पास अब कोई बहाना नहीं होगा। राज्य में माना जाता है कि सिद्धू का अपना कोई वोटबैंक नहीं है। पंजाब की राजनीति में सिख के समर्थन के बिना किसी दल के लिए सत्ता तक पहुंचना आसान नहीं होता है। कैप्टन अमरिंदर सिंह के बयानों से लगता है कि या तो वे नई राह चुनेंगे या कांग्रेस में रहते हुए सिद्धू की राह रोकेंगे। दोनों ही स्थिति में कांग्रेस कमजोर ही होगी। पंजाब में भाजपा भी अपने लिए नई जमीन तैयार कर सकती है। इसके संकेत दिख रहे हैं। वहां की राजनीतिक पिच पर कांग्रेस, शिअद–बसपा, आप और भाजपा हैं। आने वाले वक्त में कैप्टन अमरिंदर के कदम से पंजाब की राजनीतिक दिशा तय होगी। कांग्रेस के लिए भी चुनौती होगी कि वह कैप्टन अमरिंदर को नाराज कर पंजाब में अपना अस्तित्व बचा सकती है या नहीं ? कैप्टन की कीमत पर सिद्धू पर दांव खेलना कांग्रेस के लिए आत्मघाती कदम साबित होगा या नया इतिहास लिखेगा, यह 2022 के विधानसभा चुनाव में साफ हो जाएगा। कैप्टन मुक्त पंजाब में विस चुनाव सिद्धू के लिए अग्निपरीक्षा होगा।

कांग्रेस का कमजोर फैसला

– नीलम महाजन सिंह, वरिष्ठ स्तंभकार

आज सबसे बड़ा सवाल है कि क्या कांग्रेस ने पंजाब में आत्मघाती दांव खेला है। पंजाब कांग्रेस में जारी बगावत का इस तरह का अंत क्या पार्टी के लिए आत्मघाती साबित होगा? अब जब कि कुछ ही महीने विधानसभा चुनाव को बचे हैं, ऐसे में अपने कद्दावर नेता को नाराज कर मुख्यमंत्री पद से हटाना क्या कांग्रेस के सियासी भविष्य के लिए ठीक है? 52 से अधिक वर्ष तक पार्टी की सेवा करने वाले अपने निष्ठावान नेता को क्या कांग्रेस सम्मानजनक विदाई देने में भी समर्थ नहीं है? क्या नवजोत सिंह सिद्धू की पंजाब में सियासी ज़मीन इतनी मजबूत है कि वह अपने दम पर कांग्रेस की नैया पार लगा सकेंगे? अब जो नए नेता पंजाब की कमान संभालेंगे, उनके पास इतना समय होगा कि अपने काम के दम पर कांग्रेस की वापसी करवा सकें। इसकी भी क्या गारंटी है कि नए मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी को नवजोत सिंह सिद्धू सहयोग करेंगे? क्या कांग्रेस भाजपा से सीख ले सकता है कि बिना चिल्ल–पौं राज्य में मुख्यमंत्री बदल दें। आज राजनीतिक रूप से सिकुड़ने के बावजूद भी कांग्रेस कार्यशैली में बदलाव लाने को तैयार नहीं लग रही है?

पंजाब में शेक्सपियर के नाटक 'जूलियस–सीज़र' में, सीज़र के निकटतम साथी ब्रूटस ने जब सीज़र को छुरा घोंपा तो सीज़र ने कहा, 'एट टू ब्रूटस'! यह तथ्य दुनियाभर की भाषा–लिपि में विश्वासघातियों के लिए प्रयोग किया जाने लगा। पंजाब में कुछ ऐसी राजनीति कांग्रेस में 18 सितंबर को देखने को मिली। अब कैप्टन अमरिंदर सिंह ने नवजोत सिंह सिद्धू की लगातार धींगामुश्ती और पार्टी आलाकमान की बेरुखी से तंग आकर मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। कैप्टन वही शख्स हैं जिन्होंने अपने दम पर पंजाब में कांग्रेस का वनवास खत्म किया और पार्टी को 2017 में उस वक्त सत्ता दिलाई, जब देश में कांग्रेस का सूपड़ा लगभग साफ हो रहा था। पंजाब में यह जीत भाजपा के 'कांग्रेस मुक्त भारत' अभियान के लिए धक्का था। कैप्टन अमरिंदर सिंह ने अपने दून स्कूल के जूनियर, राजीव गांधी, इन्दिरा गांधी, पीवी नरसिम्हा राव, डा. मनमोहन सिंह आदि सभी के साथ कर्मनिष्ठता का प्रमाण दिया। सोनिया गांधी के साथ मिलकर कांग्रेस के लिए काम किया। अब अगर देखा जाए तो नवजोत सिंह सिद्धू ने पंजाब में कांग्रेस के लिए एक तरह से लंबी काली सुरंग खोद दी है। सिद्धू की राजनीति को कृतघ्न, अवसरवादी की श्रेणी में ही रखा जाएगा। कैप्टन अमरिंदर ने सिद्धू से आग्रह किया था, 'पाक पीएम इमरान खान के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल नहीं होई, क्योंकि हमारे सैनिक सीमाओं पर शहीद हो रहे हैं', लेकिन सिद्धू नहीं माने और वे गए। कैप्टन ने हमेशा सिद्धू को यथोचित सम्मान दिया, पर वे हमेशा बगावत के लिए उतारू रहे। संभव है कि इतिहास सिद्धू को ब्रूटस के रूप में याद रखेगा! मुख्यमंत्री बदलाव मामले में भाजपा के अंदर भी उथलपुथल है तो कांग्रेस के अंदर भी घमासान है। फर्क इतना है कि भाजपा अनुशासित तरीके से कर रही है और कांग्रेस आत्मघाती तरीके से। कांग्रेस को अगर अपना सीएम बदलना ही है तो वर्तमान सीएम को विश्वास में लेकर यह काम करें।

भारतीय जनता पार्टी 'पार्टी विद डिफरेंस' रह गई है? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह व जे.पी. नड्डा के नेतृत्व में पार्टी में सख्त अनुशासन है। भाजपा शासित राज्यों से आ रही खबरें कुछ अलग ही कहानी बयां कर रही हैं। वो चाहे उत्तर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ हों या मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान या फिर कर्नाटक के पूर्व मुख्य मंत्री बी.एस. येदियुरप्पा– बीजेपी के इन सभी मुख्यमंत्रियों की छवि को बट्टा लगाने वाली खबरों के चलते पार्टी ने इन्हें हटाना ही उचित समझा है। भाजपा ने सबकुछ शांतिपूर्ण ढंग से किया है। कांग्रेस इतनी आसानी से अपना मुख्यमंत्री नहीं बदल पा रही है। अपने बगावती नेता पर कांग्रेस लगाम नहीं लगा पा रही है। छत्तीसगढ़ में टी.एस. सिंहदेव से भूपेश वघेल को लगातार खतरा बना हुआ है। राजस्थान में सीएम अशोक गहलोत व डिप्टी सीएम सचिन पायलट में अनबन है। देश में सिकुड़ती पार्टी के लिए यह ठीक नहीं है। कांग्रेस अपना अध्यक्ष तक नहीं चुन पा रही है। पंजाब में कांग्रेस ने कथित रूप से जनाधारविहीन नेता नवजोत सिंह सिद्धू के आगे नतमस्तक होकर अपनी सियासी राह ही मुश्किल की है। कांग्रेस के पास कैप्टन अमरिंदर के कद का कोई नेता नहीं जो पंजाब में अपने दम पर सत्ता में वापसी करा सके।

कैप्टन ने जिस तरह के बयान दिए हैं, उससे साफ है कि वे कांग्रेस नेतृत्व से बेहद नाराज हैं। ऐसे में अगले चुनाव में कांग्रेस के लिए काम करेंगे, इसकी उम्मीद नहीं का जा सकती है। निश्चित रूप से कैप्टन अमरिंदर सिंह चुप नहीं रहेंगे, पंजाब में वे अपनी राजनीति की ज़मीन खत्म नहीं होने देंगे। उनके पद छोड़ने के बाद भाजपा ने जिस तरह का बयान

दिया है कि सभी देशभक्त लोगों के लिए पार्टी के दरवाजे खुले हैं और अमरिंदर की पीएम मोदी से दोस्ती के बाद अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है कि वे भाजपा के लिए तुरुप का पत्ता साबित हो सकते हैं। भाजपा पंजाब में अपनी जमीन तलाश रही है। शिरोमणि अकाली दल के राजग छोड़ने के बाद से भाजपा का विश्वास शिअद पर खत्म हो गया है। भाजपा दोबारा शिअद के साथ नहीं जाना चाह रही है। भाजपा को यह भी लगता है कि कैप्टन अमरिंदर किसान आंदोलन खत्म करने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। ऐसे में आने वाले समय में अमरिंदर और भाजपा के बीच गर्मजोशी देखने को मिले, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। आने वाले वक्त में पंजाब की राजनीति दिलचस्प होने वाली है। वहां कांग्रेस, शिअद–बसपा, आम आदमी पार्टी और भाजपा–कैप्टन के बीच चतुष्कोणीय मुकाबला देखने को मिल सकता है।

कांग्रेस की आंतरिक कलह पर नियंत्रण पाने के लिए प्रशांत किशोर की सहायता ली जा रही है। हरियाणा कांग्रेस में भूपेंद्र हुड्डा, कुमारी शैलजा, किरण चौधरी एवं अजय सिंह में नेतृत्व की होड़ जारी है। दीपेंद्र और साध्वी प्रज्ञा से 2 लाख वोटों से, भोपाल में चुनाव हारने के उपरांत दिग्विजय सिंह को कांग्रेस ने राज्यसभा में भेजा। सोनिया गांधी हारे हुए प्रत्याशियों को राज्यसभा में क्यों नियुक्त करती हैं? संगठनात्मक रूप से कांग्रेस काफी कमज़ोर है। सर्वोच्च न्यायालय के एस. आर. बोम्मई निर्णय का अनेक बार उल्लंघन हुआ है। एंटी डिसफेक्शन ला, में चुनाव उपरांत एकजुट, बहुमत प्राप्त दल से मिलकर सरकार में मंत्री बन जाते हैं। ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने सही फ़रमाया था, 'पॉलिटिशियनज़ आर स्ट्रेंज बैड फैलोज़'! साम दाम दंड भेद, सभी को दांव पर लगा दिया गया है। जनता को सूझबूझ कर निर्णय लेने चाहिए, ताकि दलों को सबक मिले। सच यह है कि कांग्रेस में गांधी परिवार का वर्चस्व खत्म हो रहा है। संगठनात्मक गतिरोध ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के नेतृत्व पर भी प्रश्नचिह्न लगा दिए हैं। कांग्रेस को पंजाब की घटना से सबक लेना चाहिए। पंजाब में कैप्टन को त्यागपत्र के लिए मजबूर कर देना कांग्रेस के राजनीतिक विस्तार के लिए ठीक नहीं है। ऐसे कदमों से वह भाजपा के कांग्रेस मुक्त भारत के अभियान का मार्ग ही प्रशस्त करेगी।

महिलाओं के लिए खतरा बनती बर्बर मानसिकता

– शंभू भद्रा, वरिष्ठ पत्रकार

बीते डेढ़ साल की आपदा में जीवन के हर पहलू पर आई मुसीबत के बावजूद समाज में अमानवीय सोच और बर्बर करतूतें भी बदस्तूर जारी हैं। गाहे–बगाहे ऐसी घटनाएं सामने आ ही जाती हैं जो इंसानों के असभ्य बर्ताव और निर्दयी चेहरे की बानगी बनती हैं। बताती हैं कि वहशी सोच को यह संकट भी संवेदनाओं से नहीं जोड़ पाया है। जीवन की अनिश्चिता भी सभ्य बनने का पाठ नहीं पढ़ा सकी है। मुंबई के साकीनाका में हुई दरिंदगी ने दिल्ली के निर्भया कांड की यादें ताजा कर दी। मुंबई की महिला के साथ हुई दिल दहला देने वाली दुष्कर्म की घटना महिलाओं के प्रति शोषण की सोच का ही नहीं हर दर्जे के अमानवीय व्यवहार का भी उदाहरण है। इस घटना में भी साल 2012 के दुर्भाग्यपूर्ण निर्भया कांड के समान ही महिला के साथ दुर्व्यवहार किया गया है। गौरतलब है कि मुंबई में हुई इस दर्दनाक घटना में भी दुष्कर्म के बाद महिला के निजी अंगों में लोहे की रॉड से वार किया गया है। क्रूरता से मारपीट और चाकुओं का वार करने वाला आरोपी सीसीटीवी फुटेज में पीड़िता की बेरहमी से पिटाई करता दिख भी रहा है। बेहोशी की हालत में सड़क पर गंभीर रूप से घायल अवस्था में मिली महिला ने बाद में अस्पताल में दम तोड़ दिया। रूह कंपा देने वाली इस हैवानियत ने एक बार फिर औरतों को लेकर असंवेदनशील सोच और आदिम व्यवहार को सामने लाकर रख दिया है। यही वजह है देश की आर्थिक राजधानी और सबसे सुरक्षित माने जाने वाले महानगर में हुई यह दरिंदगी दुष्कर्म की घटना भर नहीं कही जा सकती है।

शारीरिक शोषण के साथ ही मानसिक आघात पहुंचाने और शरीर को क्षत–विक्षत कर देने का यह क्रूर व्यवहार वाकई भयावह है। यौन शोषण की कुत्सित सोच से जुड़े हिंसक और उन्मादी व्यवहार को दर्शाने वाली ऐसी घटनाएं समाज को डराने वाली और कुत्सित सोच दिखाने वाली हैं। इंसान के अमानवीय होते जाने का उदाहरण हैं। आमजन को असहाय महसूस करवाने वाली हैं। बेटियों के भविष्य को लेकर डराती हैं। यह विडंबना ही है कि वैश्विक स्तर पर इंसान के जीवन को चुनौती देने वाले इस कोरोना आपदा काल में भी औरतों के साथ होने वाली बर्बरता कम नहीं हुई है। दुर्भाग्यपूर्ण यह भी कि ऐसे वाकये बढ़ ही रहे हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग के मुताबिक साल 2021 की शुरुआत से लेकर अगस्त महीने तक महिलाओं के खिलाफ दर्ज होने वाली शिकायतों की संख्या 19,953 रही है। यह आंकड़ा पिछले वर्ष के मुकाबले 6,335

ज्यादा है। बीते साल इस अवधि में महिलाओं के खिलाफ 13,618 शिकायतें दर्ज की गई थीं। गौरतलब है कि इन्हीं दिनों जारी राष्ट्रीय महिला आयोग के आंकड़े घर हो या बाहर, महिलाओं के खिलाफ बढ़ रही कुत्सित मानसिकता की ही तसदीक करते हैं। आंकड़ों के मुताबिक देश में महिलाओं के खिलाफ अपराधों की संख्या में न केवल बढ़ोतरी दर्ज की गई है बल्कि साल 2021 के पिछले आठ महीनों में महिलाओं के खिलाफ अपराध की शिकायतों में 46 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। महिला आयोग के मुताबिक इस साल आई शिकायतों में 7,036 शिकायतें गरिमामयी जीवन जीने के अधिकार के प्रावधान के तहत दर्ज की गईं हैं। साथ ही 4,289 शिकायतें घरेलू हिंसा और 2,923 शिकायतें वैवाहिक जीवन में उत्पीड़न या दहेज संबंधी उत्पीड़न की रही हैं। साइबर अपराध से जुड़ीं 585, छेड़छाड़ की घटनाओं को लेकर 1,116 और दुष्कर्म और दुष्कर्म की कोशिश के संबंध में 1,022 शिकायतें महिला आयोग को मिली हैं। उत्तर प्रदेश से 10,084, दिल्ली से 2,147, हरियाणा से 995 और महाराष्ट्र से 974 शिकायतें मिलीं हैं।

यह वाकई चिंतनीय है कि दूर–दराज़ के गांव हों या मुंबई दिल्ली जैसे महानगर, महिलाएं असुरक्षित परिवेश में ही जीने को विवश हैं। दरिंदगी और दुर्व्यहार के वाकये हर उम्र की स्त्रियों के साथ हो रहे हैं। बीते दिनों महाराष्ट्र के ही पुणे में एक नाबालिग बच्ची के साथ सामूहिक दुष्कर्म का मामला सामने आया है। शिक्षा, कामकाज या दूसरी जिम्मेदारियों के लिए घर से निकलने वाली औरतों के लिए यह वाकई चिंतनीय हो गया है कि सुरक्षित समझे जाने शहरों में भी यह बर्बरता होने लगी है। आंकड़े बताते हैं कि महिलाओं के लिए सहज सुरक्षित परिवेश वाला शहर मानी जाने वाली मायानगरी में भी मुंबई पुलिस ने साल 2019 में दुष्कर्म के 1,015 मामले दर्ज किए थे जबकि 2018 में शहर में इनकी संख्या 889 थी। वर्ष 2019 में दुष्कर्म की घटनाओं के मामलों में 14 फीसदी का इजाफा दर्ज किया गया है। यकीनन यह डराने और चेताने वाले आंकड़े हैं क्योंकि आधी रात को भी घर से निकलने पर मुंबई में महिलाओं को अपनी सुरक्षा का डर नहीं सताता था। यह शहर इस के बात के लिए देश भर में जाना जाता है। यह सुरक्षित परिवेश मायानगरी में देश के हर हिस्से से आने वाली महिलाओं को खुलकर जीने और अपने सपने पूरे करने की हिम्मत और भरोसा देता रहा है। तकलीफ़देह ही है ऐसे मामले इस भरोसे को तोड़ने वाले हैं। औरतों के आगे बढ़ने की राह रोकने वाले हैं। होना तो यह चाहिए कि धीरे–धीरे असुरक्षित समझे जाने वाले क्षेत्रों में भी औरतों के लिए सहज सहयोगी परिवेश बनता पर अब तो सुरक्षित शहरों में भी ऐसे वाकये हो रहे हैं।

अगर गहराई से देखा–समझा जाए तो दुष्कर्म कोई साधारण अपराध नहीं है। यह पीड़िता को हर तरह से पीड़ा पहुंचाने वाला दुर्व्यवहार है। नतीजतन ऐसे वाकये कई मोर्चों पर चिंता बढ़ाने वाले हैं। ऐसी हर घटना के निशान कहीं न कहीं पूरे समाज की सोच पर चस्पा हो जाते हैं। ऐसी घटनाएं सिर्फ पीड़िता की जिंदगी नहीं ही छीनतीं बल्कि सभी महिलाओं के जीवन को भय और असुरक्षा की कितनी ही आशंकाओं की अनचाही पीड़ा दे जाती हैं इंसानों के हैवान बन जाने के ऐसे उदाहरण समाज के बीमार और बदरंग होते चेहरे को दिखाते हैं। यह बताते हैं कि कुत्सित सोच वाले लोगों को न समाज की चिंता है और ना कानून का भय और इन्सान तो वे हैं ही नहीं। जरूरी है कि ऐसे मामलों को अंजाम देने वालों को कठोरतम सजा देने का प्रावधान हो। महिलाओं की अस्मिता को ठेस पहुंचाने और जीवन छीन लेने वाले ऐसे दरिंदों को त्वरित कानूनी कार्रवाई कर सख्त सजा दी जानी चाहिए।

महान कृषि वैज्ञानिक डॉ. रामधन सिंह जी की जयंती पर नमन!

– जय गोपाल अरोड़ा

'हरित क्रांति' के अग्रदूत विश्व विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ० रामधन सिंह जी को जिन्होंने दुनिया में हरित क्रांति से 40 साल पहले भारत में हरित क्रांति की नींव रखी। 1 मई 1891 में रोहतक जिले के किलोई गांव में साधारण किसान के घर जन्मे और लंदन कैम्ब्रिज से प्राकृतिक विज्ञान और कृषि में Ph.D करने के बाद 1925 में Punjab Agriculture College and Research Institute, Layallpur में प्रिंसिपल लगे। 1947 में रिटायरमेंट तक वहीं रहकर भारत ही नहीं दुनियां के लिए फसलों की नई किस्में इजाद की (गेहूं, जौं, धान, दाल, गन्ना आदि)

केनेडा और मेक्सिको आदि ने सबसे पहले उनकी गेहूं C-591 अपनाई और पैदावार के रिकॉर्ड बनाये। C-217, C-228, 250, 253, 273, 281 और C-285, C-518, C-591 आदि उनकी मुख्य गेहूं की किस्मे थी।

जिस C-306 गेहूं को आज भी सबसे स्वादिष्ट माना जाता है उसे डॉ० रामधन सिंह जी ने इजाद किया था। संसार

में मशहूर बासमती चावल 370 और झोना 349 भी डॉ० रामधन जी की ही देन है। उनके योगदान का अंदाजा यों लगा सकते हो, जिसको Mexico से नोबल पुरस्कार विजेता डॉ० नोरमन बोरलोग 1963 में डॉक्टर रामधन सिंह जी के पैर छू कर कहें "आपने संसार को बेहतर किस्में देकर 100 करोड़ लोगों को भूखे मरने से बचा लिया"

1965 में लाल बहादुर शास्त्री जी ने डॉ० रामधन सिंह जी को किसी भी राज्य के गवर्नर बनने के लिए कहा था लेकिन डॉक्टर रामधन सिंह जी ने कहा "राज्यपाल बनने से ज्यादा भला में वैज्ञानिक के तौर पर कर सकता हूँ देश का" और उन्होंने ऐसा किया भी।

1961 में पाकिस्तान ने डॉ० रामधन सिंह जी को राष्ट्रपति गोल्ड मैडल से सम्मानित किया और वह यह सम्मान पाने वाले पहले भारतीय बने।

20 अप्रैल 1977 को डॉ० रामधन सिंह जी इस संसार को अलविदा कह गए लेकिन सबको जिन्दा रहने के लिए अथाह अनाज भंडार दे गए।

73 साल आजादी के बाद भी आज भारत में उनकी गेंहू C-306, बासमाती चावल–370 और गन्ना–312 ऊगाया जाता है और गुणवत्ता के लिये जाना जाता है।

डॉ० रामधन सिंह जी अमर रहेंगे!!!

ईमानदारी और सादगी के प्रतीक थे शास्त्री जी

– अंकुर सिंह

देश के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर को शारदा प्रसाद और रामदुलारी देवी के घर उत्तर प्रदेश में मुगलसराय शहर के पास रामनगर में हुआ था। नेहरू जी के निधन के बाद शास्त्री जी देश के दूसरे प्रधानमंत्री बने। शास्त्री जी के ईमानदारी और सादगी–पूर्ण जीवन के अनेक किस्से है –

पहला वाक्या जिक्र कर रहा हूं, जब शास्त्री जी देश के प्रधानमंत्री थे, एक बार उनके बेटे सुनील शास्त्री जी कही जाने हेतु सरकारी गाड़ी लेकर चले गए और जब वापस आए तो लाल बहादुर शास्त्री जी ने पूछा कहा गए थे, सरकारी गाड़ी लेकर इस पर सुनील जी कुछ कह पाते की इससे पहले लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा कि सरकारी गाड़ी देश के प्रधानमंत्री को मिली है ना की उसके बेटे को, आगे से कही जाना हो तो सरकारी गाड़ी का प्रयोग ना किया करो, शास्त्री जी यही नहीं रुके उन्होंने अपने ड्राइवर से पता करवाया की गाड़ी कितने किलोमीटर चली है और उसका पैसा सरकारी राज कोष में भी जमा करवाया।

हमारे देश में आजकल जन प्रतिनिधियों के परिजनों के साथ उनके करीबी लोग भी उन्ही के सरकारी गाड़ी में घूमते हैं अपने व्यक्तिगत कार्यों के लिए।

दूसरा वाक्या जिक्र कर रहा हूं, लाला लाजपतराय ने आजादी की लड़ाई लड़ रहे गरीब देशभक्तों के लिए सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी बनायीं थी जो गरीब देशभक्तों को पचास रुपये की आर्थिक मदद प्रदान करती थी, एक बार जेल से उन्होंने अपनी पत्नी ललिता जी को पत्र लिखकर पूछा कि क्या सोसाइटी की तरफ से 50 रुपये की आर्थिक मदद मिलती हैं उन्हें, जवाब में ललिता जी ने कहा हाँ जिसमे से 40 रुपये में घर का खर्च चल जाता है। शास्त्री जी ये पता चलते ही बिना किसी देर किये सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी को पत्र लिखा कि मेरे घर का खर्च 40 रुपये में हो जाता हैं, कृपया मुझे दी जानी वाली सहयोग 50 रुपये से घटा कर 40 रुपये कर दी जाए ताकि ज्यादा से ज्यादा देशभक्तों को भी आर्थिक सहयोग मिल सकें।

आज का युग में तो यदि जन प्रतिनिधियों के सैलरी बढ़ोत्तरी की बात हो तो क्या सत्ता पक्ष, क्या विपक्ष दोनों एक मत हो इस मांग पर अपना समर्थन दे देते हैं, भले ही राष्ट्रहित और समाज हित के मुद्दों पर ये लड़ते देखे जाए। ये भी नहीं सोचते आज के वर्तमान जनप्रतिनिधि तो सरकारी पैसे से मौज से जी रहे है और देश का किसान, मजदूर इत्यादि गरीबी, महंगाई और अभाव की जिंदगी जी रहे हैं।

किस्सों के दौर में आगे चलते है तो एक किस्सा और जुड़ा है शास्त्री जी से, शास्त्री जी जब प्रधानमंत्री थे और उन्हें मीटिंग के लिए कही जाना था। जब वह कपड़े पहन रहे थे तो उनका कुर्ता फटा था जिसपर परिजनों ने कहा आप नया कपड़ा क्यों नहीं ले लेते हैं। इस पर पलट कर शास्त्री ने कहा की मेरे देश के अब भी लाखों लोगो के तन पर कपड़े नहीं है, फटा हुआ तो क्या हुआ इसके ऊपर कोट पहन लूंगा, और फटा कपड़ा इस तरह कुछ दिन और काम में आ जायेगा।

ऐसे थे हमारे शास्त्री जी, आज के जनप्रतिनिधियों, मंत्रियों के सुट लाखों में आते हैं इन्हे इससे फर्क नहीं पड़ता की देश के लाखों लोगो की वार्षिक आय भी नहीं होगी लाखों रुपये।

कथनी और करनी में समानता रखते थे शास्त्री जी,

बात सन 1965 का जब भारत और पाकिस्तान का युद्ध चल रहा था और भारतीय सेना लाहौर के हवाई अड्डे पर हमला करने की सीमा के भीतर पहुंच गयी थी। घबराकर अमेरिका ने अपने नागरिकों को लाहौर से निकालने के लिए कुछ समय के लिए युद्धविराम की अपील की उस समय हम अमेरिका की पीएल–480 स्कीम के तहत हासिल लाल गेहूं खाने को बाध्य थे हम भारतीय। अमेरिका के राष्ट्रपति ने शास्त्री जी को कहा कि अगर युद्ध नहीं रुका तो गेहूं का निर्यात बंद कर दिया जाएगा। उसके बाद अक्टूबर 1965 में दशहरे के दिन दिल्ली के रामलीला मैदान में शास्त्री जी ने देश की जनता को संबोधित किया। उन्होंने देशवासियों से एक दिन का उपवास रखने की अपील की और साथ में खुद भी एक दिन उपवास का पालन करने का प्रण लिया। देश के सीमा के रक्षक जवान और देश के अंदर अन्नदाता के लिए जय जवान, जय किसान का नारा दिया।

10 जनवरी 1966 को ताशकंद में भारत के प्रधानमंत्री शास्त्री जी और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के बीच बातचीत करने का समय निर्धारित था। लाल बहादुर शास्त्री और अयूब खान तय किये गये निर्धारित समय पर मिले। बातचीत काफी लंबी चली और दोनों देशों के बीच शांति समझौता भी हो गया। ऐसे में दोनों मुल्कों के शीर्ष नेताओं और प्रतिनिधि मंडल में शामिल अधिकारियों का खुश होना उचित था। लेकिन उस दिन की रात शास्त्री जी के लिए मौत बनकर आई। 10–11 जनवरी के रात में प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की संदिग्ध परिस्थितों में मौत हुई। ताशकंद समझौते के कुछ घंटों बाद ही भारत के लिए सब कुछ बदल गया। विदेशी धरती पर संदिग्ध परिस्थितियों में भारतीय प्रधानमंत्री की मौत से सन्नाटा छा गया। शास्त्री जी की मौत के बाद तमाम सवाल खड़े हुए, उनकी मौत के पीछे साजिश की बात भी कही जाती है, क्योंकि, शास्त्री जी की मौत के दो अहम गवाह उनके निजी चिकित्सक आर एन चुग और घरेलू सहायक राम नाथ की सड़क दुर्घटनाओं में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हुई तो यह रहस्य और गहरा हो गया।

देश के नागरिकों को चाहिए कि शास्त्री जी के मौत की निष्पक्ष जांच की मांग करें सरकार से, यही शास्त्री जी के प्रति देश वासियों की सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

सहज, सरल, हंसमुख व्यक्तित्व : चौधरी अजित सिंह

– राजेन्द्र फौजदार

जाट इतिहास की गौरवशाली परम्परा की निरन्तरता को बनाये रखने में चौ० चरण सिंह, चौ० देवीलाल, कुम्भाराम आर्य, नाथूराम मिर्धा, रामनिवास मिर्धा, बलराम जाखड़, दौलतराम सारण और महेन्द्रसिंह टिकैत के बाद चौ० अजित सिंह एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। उत्तर भारत की राजनीति को इन किसान और ग्रामीण हितैषी नेताओं ने चौ० छोटूराम और देश की आजादी के पश्चात सर्वाधिक प्रभावित किया है। चौ० अजित सिंह ने भारतीय राजनीति में गांव, किसान और जाटों के प्रतिनिधी की 35 वर्ष तक सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने अपने पिता चौ० चरणसिंह की विरासत को अच्छी तरह सम्भाला।

मेरी उनसे विशेष मुलाकात उन्हीं के निवास 12 तुगलक रोड पर 2002 में सितम्बर में हुई। उस समय वह देश के कृषि मंत्री थे। चौधरी चरण सिंह जी का यह जन्म शताब्दी वर्ष था। जाट समाज पत्रिका ने इस पर जन्म शताब्दी विशेषांक निकालने का निश्चय किया। इसी संदर्भ में उनसे विशेष मुलाकात की। इससे पहले 1 दिसम्बर 2001 के आगरा में आर्यान पेशवा राजा महेन्द्र प्रताप जयन्ती के आयोजन में उनसे काफी देर बातचीत हुई थी। आयोजन में हुए प्रातः कालीन यज्ञ में हम साथ–साथ ही बैठे थे। जाट समाज पत्रिका संस्थापक एवं आर्यान पेशवा राजा महेन्द्र प्रताप जयन्ती और चौधरी चरण सिंह जन्म शताब्दी समिति के अध्यक्ष स्व. श्री रामसिंह जी फौजदार (पिताजी) ने अगले वर्ष के आयोजन के लिए चौ० चरण सिंह श्रद्धाजंलि विशेषांक जून–जुलाई नवम्बर 1987 भेंट किये। बहुत ही सीमित साधनों के साथ जाट समाज पत्रिका प्रकाशन 1978 से निरन्तर हो रहा था। चौ० साहब के स्वर्गवासी होने पर उनके अंतिम समय के फोटोग्राफ मंगाये थे, वह या तो चौ० अजित सिंह जी ने अथवा किसान ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी भाई अजय सिंह जी ने भेजे थे, अब ठीक से स्मरण नहीं। उस समय फोटो के ब्लॉक बनकर छपते थे। उनमें एक चित्र चौ० साहब की मृत्यु शैया के निकट

उपस्थित परिजनों का भी था। उस चित्र में चौ० अजित सिंह, उनकी पत्नी, मां गायत्री देवी और एक बच्चा बैठा है।

चौ० अजित सिंह वर्ष 2002 में अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में देश के कृषि मंत्री थे। एक कृषि मंत्री के रूप में उन्होंने अनेकों महत्वपूर्ण निर्णय लिए थे। उन्होंने अनेक चीनी मिलें स्थापित करवाई ताकि किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य मिल सके और गन्ने की भरपूर खपत हो सके जिससे किसान की आर्थिक सम्पन्नता बढ़ सके। पैट्रोल में एथेनाल मिलाने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया और उसे लागू करने की अनुमति प्रदान की। किसानों के हित में गुढ़ नियंत्रण कानून को रद्द कराया। अपनी कृषि उपज दूसरे राज्यों में लें जाने की पाबंदी उन्होंने हटवाई। चौ० चरण सिंह की मजगर समीकरण (मुसमान, जाट, गूजर, राजपूत) की नीति को राजनतिक संगठन के लिए चौ० अजितसिंह ने भी अपनाया।

चौ० चरणसिंह जन्म शताब्दी विशेषांक हेतु चौधरी चरणसिंह के पुत्र और देश के कृषि मंत्री से मुलाकात करने हम उनके निवास पर पहुंचे। वह कार्यालय में थे और बाहर बरामदा मुलाकातियों से खचाखच भरा हुआ था। मैंने अपना विजिटिंग कार्ड उन्हें भेजा तो उन्होंने तुरन्त हमें अन्दर बुला लिया। मेरे साथ जाट समाज पत्रिका सहयोगी और दिल्ली युवा जाट महासभा के अध्यक्ष श्री फुलवर सिंह चाहर भी थे। हमारे कमरे में प्रवेश करते ही उन्होंने बहुत उत्साह भरे शब्दों में स्वागत किया और उलाहना देते हुए हंसकर बोले – 'आप तो हमारे विपरित छापते हो।' हमें इस अप्रत्याशित संवाद की बिल्कुल संभावना न थी।

मैंने कहा – 'चौधरी साहब जाट समाज पत्रिका ही आपको अपने विपरित लगने वाली बातें बिना लाग लपेट के छाप सकती है। हो सकता है कुछ लोगों ने आपसे कहा हो कि जाट समाज पत्रिका आपकी विरोधी है। हम सजातीय पत्रकारिता कर रहे हैं और हमारा प्रयास रहता है कि हमारे राजनेता और समाजनेताओं तक सही बात पहुंचे। उनके गलत निर्णयों की आलोचना से भी हम नहीं चूकते।'

मैंने उनसे प्रत्युत्तर किया – 'आप स्वयं बतायें क्या पत्रिका में कुछ भी गलत छपता है।'

वह बोले – 'नहीं, गलत तो कुछ भी नहीं छपता। आप ठीक ही छापते हैं। मैं स्वयं पत्रिका के सम्पादकीय और लेख पढ़ता हूँ। हमें कई बार अपने सही–गलत का अहसास है।'

उन्हें हमने बताया कि आपको विदित ही है कि यह वर्ष चौधरी चरणसिंह जन्म शताब्दी वर्ष है। हम इस अवसर पर जाट समाज पत्रिका का विशेषांक निकालने जा रहे हैं जो कि 23 दिसम्बर 2002 तक प्रकाशित होकर पाठकों तक पहुंच जायेगा।

उन्होंने पूछा – 'मुझे बतायें कि मैं आपका कैसे सहयोग कर सकता हूँ।'

मैंने कहा – 'हम चौधरी साहब के सुपुत्र से मिलने आये हैं, कृषिमंत्री से नहीं। हमें आपसे कोई आर्थिक सहयोग नहीं चाहिए। चौ० साहब से संबंधित कुछ व्यक्तिगत जानकारी और साहित्य उपलब्ध करा दें। वह काफी संतुष्ट नजर आये क्योंकि अक्सर पत्रकार अपने या मिलने वालों के कार्यों के लिए या विज्ञापनों के लिए ही राजनेताओं से सम्पर्क करते हैं। वह यह जानते थे कि 'जाट समाज पत्रिका' पूरे देश के जाटों में लोकप्रिय पत्रिका है। हम कभी भी व्यक्तिगत कार्य के लिए उनके पास नहीं गये थे जबकि वह इससे पहले दो बार मंत्री रह चुके थे।

निश्छल, सौम्य और अपनापन लिए उनके बर्ताव ने प्रभावित किया। नहीं लगता था कि हम किसान मसीहा चौधरी चरणसिंह के इकलौते पुत्र और देश के कृषि मंत्री के समक्ष बैठे हैं। बहुत सीधा–सरल स्वभाव, न कहीं अंहकार न कोई बनावट एक भोलेपन के लिए हंसमुख व्यक्तित्व।

उन्होंने तुरन्त किसी भी व्यक्ति को बुलाया। किसान ट्रस्ट का कार्यालय भी उनके निवास के परिसर में पीछे की ओर था। उन्होंने आज्ञा दी कि चौधरी साहब से संबंधित पुस्तकें फौजदार जी को दे दी जायें और जो पुस्तकें देने के लिए उपलब्ध न हों उनमें से जो सामग्री यह चाहें वह फोटोस्टेट कर दी जावें।

उस व्यक्ति के जाने के पश्चात उनहोंने पिताजी की कुशलक्षेम पूछी। मैंने बताया कि वह 'चौ० चरणसिंह जन्म शताब्दी समिति के अध्यक्ष हैं और इस वर्ष समिति ने कई आयोजन किये हैं और आगे भी कर रही है। जाट समाज पत्रिका के इस विशेषांक का विमोचन भी दिसम्बर में राजा महेन्द्र प्रताप जयन्ती एवं चौ० चरणसिंह जयन्ती सयुंक्त समारोह में किया जायेगा। समारोह के लिए उन्हें आगरा आने के लिए आमंत्रित किया। हालंकि वर्ष के अन्त में चौधरी चरण सिंह जन्म शताब्दी के अनेक आयोजनों में व्यस्त होने के कारण वह आगरा नहीं आ पाये थे। उस

समारोह में राजस्थान के गांधीवादी नेता और चौ० चरण सिंह के साथी, अनुयायी दौलतराम सारण जी मुख्य अतिथि के रूप में शरीक हुए थ।

बातचीत के दौरान उनके इंजीनियर बनने, अमेरिका में पढ़ने और नौकरी करने के संबंध में जानकारी चाही तो चौ० अजित सिंह ने बताया – 'पिताजी को समय नहीं था कि वह हमारी पढ़ाई–लिखाई की बहुत फिक्र कर पाते किन्तु कभी–कभी जानकारी अवश्य कर लेते थे। माताजी ने हम सभी भाई बहनों की शिक्षा का विशेष ध्यान रखा। पिताजी प्रेरित अवश्य करते थे कि अपनी योग्यता पर ही आगे बढ़ों, सिफारिश से नहीं। जब मैं खड़गपुर से इंजीनियरिंग कर रहा था तो काफी सीनियर अमेरिका चले जाते थे और आगे की पढ़ाई करके अच्छी नौकरी पा लेते थे। मैंने भी एक बार पिता जी से कहा कि मैं भी बीटैक के बाद आगे पढ़ने के लिए अमेरिका जाना चाहता हूँ। उन्होंने बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहा कि मेरे पास इतना पैसा नहीं है कि मैं तुम्हें अपने खर्चे पर अमेरिका भेज सकूँ। हाँ, यदि तुम्हें स्कॉलरशिप मिल जाये तो मुझे कोई दिक्कत नहीं है। आई आई टी में प्रथम आने पर मुझे अमेरिकन स्कॉलरशिप मिली तब मैं वहां एम.एस. (बीटैक) करने जा सका। चौ० साहब नहीं चाहते थे कि मैं राजनीति में भाग लूं। अतः मैंने अमेरिका में ही कम्प्यूटर की कम्पनी आई.बी.एम में नौकरी कर ली। उनके लम्बे बीमार होने पर मैं नौकरी छोड़कर यहाँ आ गया। इसके बाद उनके अनुयायियों और प्रसंशकों ने उनकी विरासत को सम्भालने की जिम्मेदारी मेरे कंधे पर डाल दी। चौ० साहब (पिताजी) बच्चों को बहुत स्नेह करते थे। राजनैतिक क्षेत्र में उनका बहुत रौब था। पार्टी में उन्हें अनुशासनहीनता बिल्कुल पसन्द न थी। किसी कार्यकर्ता की हिम्मत न होती थी कि उनसे बिना पूछे दरवाजे की चिक हटाकर अन्दर कमरे में घुस आये। हालांकि वह पार्टी कार्यकर्ताओं, ग्रामीणों और किसानों का बहुत ख्याल रचाते थे।

'बचपन में क्या कभी किसी गलती पर आपकी पिटाई हुई ?

'मुझे याद नहीं, कभी उन्होंने किसी बहन भाई की पिटाई की हो।'

'परिवार के प्रति उनका क्या सोच था ? क्या वह कुछ समय घर में दे पाते थे ?'

'वह प्रायः पढ़ने–लिखने और राजनीति में व्यस्त रहते थे। अपनी जिम्मेदारियों को भी निभाते थे। घर में यदि कोई बच्चा बीमार हो जाता तो रात जागकर स्वयं दवाई देते थै। एक बार को माता जी आलस्य कर सकती थीं, किन्तु वह आलस्य बिल्कुल नहीं करते थे। वह प्रायः हमें होम्योपैथी की दवाईयां देते थे।'

उनके पुस्तकालय में 'परंतप' नामक ग्रन्थ था जिसमें चौ० चरण सिंह के संबंध में ततकालीन देश के प्रतिष्ठित लोगों के आलेख थे। पुस्तक का नाम भी चौ० अजितसिंह ने सुझाया था किन्तु उसकी एक ही प्रति थी। कुछ लेखों के फोटोस्टेट भी कराये किन्तु बिना सामग्री को पढ़े प्रकाशन के लिए चुनना ठीक प्रतीत नहीं हुआ। इतना समय नहीं था कि वहां बैठकर पुस्तक का अध्ययन किया जा सकता। चौ. अजीत सिंह को जब यह बात बताई तो उन्होंने कहा कि आप इस पुस्तक को ले जावें। हमारे पास इसकी एक ही प्रति है। अतः बाद में आप इसे वापस भिजवा दें।

चौ० चरण सिंह जन्म शताब्दी विशेषांक नवम्बर के अंत में प्रकाशित हुआ और 1 दिसम्बर को इसका विमोचन हो गया। विशेषांक की प्रतियां चौ० अजित सिंह को भेज दी गई। बाद में 'परंतप' को फुलवर सिंह चाहर के माध्यम से व्यक्तिगत रूप से भेजा। उन्होंने धन्यवाद के साथ जब 'परंतप' ग्रन्थ चौ० अजितसिंह को लौटाया तो उन्होंने कहा कि पत्रिका का चौ० चरण सिंह जन्म शताब्दी विशेषांक पढ़ा है। बहुत अच्छा निकाला है। अनेक जानकारी चौ० साहब के संबंध में मिली जो हमें भी पता नहीं थी।

चौ० अजित सिंह जाट संगठन और जाट साहित्य में रूचि रखते थे अक्सर किसान संगठन की इसे रीढ़ समझते थे। उनसे एक दो बार फोन पर भी बातचीत हुई, जब उन्होंने राजस्थान में पार्टी के विस्तार के संबंध में कुछ जानकारी एवं सलाह चाही थी।

वह एक बहुत अच्छे, नेक इंसान थे। वह झूठ फरेब की शातिर राजनीति से परे थे। चौधरी चारण सिंह जी के अनुयायियों ने उन्हें सदा अपने परिवार का मुखिया ही मानकर उन पर पूर्ण विश्वास किया था। कई बार राजनैतिक विचारों की अस्थिरता और मजबूरी के कारण कार्यकर्ताओं को बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ा हो किन्तु बड़े चौधरी के पश्चात छोटे चौधरी को ही उन्होंने सदा अपना हितैषी राजनैतिक मुखिया माना। राजनीति के दलदल में उनकी छवि भी अपने पिता के समान साफ–सुथरी रहीं।

विनम्र रचना-पुष्प

– श्याम सुन्दर परुथी, एडवोकेट

लौट सका तो फिर आऊँगां, स्वप्निल शहर बसाने को।
लेकिन आज मुझे मत रोको, मन करता घर जाने को।
क्रूर काल ने विषय व्याधि का, निर्मम अस्त्र चलाया है।
रोजगार का गला घोंट कर, निर्धन और बनाया है।
माता–पिता, बहन–भाई सब, मिलने को बेचैन हुए।
दिवस रैन आंसू से बोझिल, घर–वाली के नैने हुए।
होगा फिर सब ठीक, जा रहा, ढाढ़स उन्हें दिलाने को।
लेकिन आज हमें मत रोको, मन करता घर .....।।
स्वेद–कणों से अभिसिंचित कर, हमने नगर बनाये हैं।
मंदिर–मस्जिद, महल–दुमहले, सब मेरे ही जाये है।
हमें बना कर विश्व–विधाता, भव–सागर में छोड़ गया।
भूल गया अपनी रचना को, दुख से नाता जोड़ गया।
आ जाओ! करुणा निधान, दुखियों का दर्द मिटाने को।
लेकिन आज हमें मत रोको, मन करता घर .....।।
आयातित है वाह्य व्याधि यह, हम सब का कुछ दोष नहीं।
वायुयान से ले आये जो, उन पर करते रोष कहीं।
जो समर्थ धनपति धरती के, उनकी त्रुटि का ध्यान करो।
शुद्ध सर्वहारा प्राणी का, और न अब अपमान करो।
इज्जत से रोटी खाते हैं, चिंतित लाज बचाने को।
लेकिन आज हमें मत रोको, मन करता घर .....।।
मत करना उपहास कभी भी, काल सदा हमसे हारा।
श्रम से सुरभित अपना तन–मन, निष्कलंक जीवन सारा।
पतझड़ में पंचम सुर गाकर, जीवन मधु जग पर वारा।
हमने गिरि, वन, काट रचे पथ, मोड़ी नदियों की धारा।
देश भक्त हम यत्न करेंगे, फिर अच्छे दिन लाने को।
लेकिन आज हमें मत रोको, मन करता घर .....।।
लौट सका तो फिर आऊंगा, स्वप्निल शहर बसाने को।
लेकिन आज हमें मत रोको, मन करता घर जाने को।।

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (DOB Nov. 94) 26/5'1" NET in Commerce, B.Ed, Pursuing PhD. from M.D.U. Rohtak. Working as Guest Faculty at CDLU Sirsa. Father in Haryana Government. Mother housewife. Preferred match in Government job. Avoid Gotras: Gill, Goyat, Gehlawat. Cont.: 9416193949*
- *SM4 Jat Girl 34/5'2" B.Tech (CSC) Employed as Senior Delivery Manager (Software Developer) in MNC Chandigarh with Rs. 22 lakh PA. Avoid Gotras: Jaglan, Gahlan, Kadyan. Cont.: 7837113731*
- *SM4 Jat Girl (DOB 06.02. 92) 29/5'3" Master in Economics and B.Ed. Employed as teacher in Manav Rachna International School Mohali. Avoid Gotras: Nain, Panghal, Sangwan, Dhaliwal. Cont.: 8699726944, 7009399930*
- *SM4 Jat Girl 25/5'5" CSE from P.U. Chandigarh. Employed as P.O. in BOI. Avoid Gotras: Ahlawat, Lohchab, Balhara, Rathi not direct. Preference Tri-city based family and at least equal status. Cont.: 9417378133*
- *SM4 Jat Girl (DOB 88) 33/5'3" M.A. (Economics), PhD. (Economics) NET cleared. Working in "Niti Aayog" New Delhi. Father class-II officer retired from Haryana Govt. Brother settled in USA. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Jatrana. Cont.: 9988224040*
- *SM4 Jat Girl (DOB 01.01.96) 25/5'4" Post Basis BSc. Nursing 2nd year. Avoid Gotras: Brach, Bhophia. Cont.: 9988440565*
- *SM4 Jat Girl (DOB 04.05.90)31/5'5" B.Tech (Electrical & Communication). Employed in Indian Railways as ASTE (Assistant Signal & Telecommunication Engineer) at Sealdah (Kolkatta). Avoid Gotras: Kulria, Khicher. Cont.: 9416342608*
- *SM4 Jat Girl (DOB 02.07.90)31/5'3" B.C.A. from Punjab University. Working in Chandigarh Administration. Avoid Gotras: Dagar, Ohlyan, Dhundwal. Cont.: 9041505150, 8968539993*
- *SM4 Jat Girl 26/5'5" B. Tech. (CS). Working as Deputy Manager, WNS Gurgaon with Rs. 20 LPA. Father working in AFT Chandigarh. Mother homemaker. Brother Army Officer NDA. Avoid Gotras: Goyat, Khatkar, Nain. Cont.: 7988624647, 8427737450*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.08.91) 30/5'2" M.Sc. (Math), MSc. Psychology (Gold Medalist) P.G. Diploma in Guidance & Counseling). B.Ed. (CTET-PRT & TGT) (APS-CSB-PRT). Working as Assistant Professor contractual. Father Retired Kanoongo. Mother housewife. Avoid Gotras: Rathi, Jhanjhariya, Rohz, Direct Ahlawat, Pawar.*

Cont.: 9992075101

- *SM4 Jat Girl (DOB 22.08. 87) 34/5'6" M.Sc. (Physics) M. Tech. (Material Science & Engineering). PhD Chemistry. Working as Guest Faculty in Delhi University with 8 lakh LPA. Got Doctor scholarship from Science & Technology Department. Father retired from Govt. job. Mother housewife. Avoid Gotras: Rathi, Kuhar, Mann. Cont.: 9466568539*
- *SM4 Jat Girl (DOB 14.05.98) 23/5'5" M.Sc. (Physics). Doing B.Ed. Avoid Gotras: Khatkar, Lohan, Dhull. Cont.: 7986168202*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.03. 2000) 21/5'4" M.Sc. (Non-Medical) Doing B.Ed. Father Govt. Teacher. Mother housewife. Avoid Gotras: Khatkar, Lohan, Dhull. Cont.: 7986168202*
- *SM4 Jat Girl (DOB 25.01. 97) 24/5'6" M.Sc. (Chemistry) B.Ed. Avoid Gotras: Khatkar, Sheoran, Sohlat, Thakan. Cont.: 9888518198*
- *SM4 Jat Girl (DOB 15.09.95) 25/5'5" B.Sc (Micro-Biology), M.Sc. (Micro-Biology) from K.U.K. Preparing for I.A.S. Father retired from Govt. Job. Agriculturist landlord. Mother housewife. Family settled at Jagadhri (Yamuna Nagar). Avoid Gotras: Sheoran, Chahal. Cont.: 9518680167, 9416036007*
- *SM4 Jat Girl (DOB 06.02.95) 26/5'6" B.A.from Delhi University, MBA from I.P. University. Doing B.Ed and preparing for NET entrance. Father Chief Pharmacy Officer (NTPC). Family settled at Bahadurgarh (Jhajjar). Avoid Gotras: Khatri, Dalal, Rana. Cont.: 9650993615*
- *SM4 Divorced Jat Girl (DOB 20.02.85) 36/5'4" B.Sc, B.Ed., MSc. with Math. CTET cleared. Employed in K. V. school on contact basis. Father retired from Indian Air Force. Own house at Chandigarh. Avoid Gotras: Gill, Rathi, Goyat. Cont.: 9417216868*
- *SM4 Jat Girl 28/5'3" B.Tech. Employed as Bank Officer in SBI. Father retired class-I 0fficer from Haryana Government. Mother Bank Officer in PNB. Preferred Tri-city based well settled officer boy of educated family. Avoid Gotras: Sehrawat, Lohan, Ahlawat. Cont.: 9877956770, 9815041361*
- *SM4 Jat Girl 26/5'5" B.Tech. (C.S.). Working as Senior Software Developer in Coforge Ltd. Noida with Rs. 10 lakh package PA. Father working in AFT Chandigarh. Mother home maker. Brother Army Officer (NDA). Avoid Gotras: Goyat, Khatkar, Nain. Cont.: 8427737450, 7988624647*
- *SM4 Jat Girl 29/5'4". B.A. from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal University Rohtak. Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881*
- *SM4 Jat Boy (DOB18.10.90) 29/6'1" B.Tech from P.U. Chandigarh. Working as Inspector in CBI. Father retired as Under Secretary. Preferred working match in Central Government. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal, Mor. Cont.: 9023492179, 7837551914*
- *SM4 Jat Boy (DOB 04.10.88) 32/6'1" B.A., LLM Working as Legal Consultant in Law Firm at Chandigarh with Rs. 30000 PM. Father Class-I officer retired. Mother housewife. Family residence at Panchkula and Sonepat. Avoid Gotras: Malik, Jhanjharia. Cont.: 9876155702*
- *SM4 Jat Boy (DOB 28.05.93) 28/5'8" B.A., Employed in Bharat Electronics Limited Panchkula on contract basis. Avoid Gotras: Kundu, Phogat, Ruhil. Cont.: 7696544003*
- *SM4 Jat Boy (DOB 01.01.94) 27/5'3" B.Tech., MBA., Marketing. Businessman. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Halawat. Cont.: 9463881657*
- *SM4 Jat Boy (DOB 09.06.93) 28/5'8" Diploma in Civil Engineering. Employed in Indian Air Force X Group (Corporal). Father Retired Kanoongo. Mother housewife. Avoid Gotras: Rathi, Jhanjhariya, Rohz, Direct Ahlawat, Pawar. Cont.: 9992075101*
- *SM4 Jat Boy (DOB 05.11.97) 23/6'1" B.Tech. (Mechanical). Employed in Chandigarh Administration on regular basis. Father Sub. Inspector in Haryana Police. Mother housewife. Preferred match with job in tri-city. Avoid Gotras: Nayotne, Bhadhran (Goyat), Panjeta. Cont.: 9467412702*
- *SM4 Divorced Jat Boy (DOB13. 09. 86) 34/5'9" B. Tech & Diploma in Electrical Engineering. Employed in Central Government Department on contact basis. Father retired from Indian Air Force. Own house at Chandigarh. Avoid Gotras: Gill, Rathi, Goyat. Cont.: 9417216868*
- *SM4 Jat Boy (DOB 10.08.88) 32/5'9" B.Tech. (Mechanical). Working as Training Officer, GITOT Rohtak. Avoid Gotras: Kharb, Rathi, Khatri. Cont.: 9416152842*
- *SM4 Jat Boy 28/6'2" Captain in Army. District Yamuna Nagar (Haryana). Avoid Gotras: Darri, Sindhad, Sindhu. Cont.: 7717397230*
- *SM4 Jat Boy (DOB14. 03. 95) 26/5'10", B.A. Doing MA. Working in Municipal Corporation Chandigarh as clerk on contract basis. Own house at Panchkula. Avoid Gotras: Sangwan, Jakhar, Pachar. Cont.: 9463961502*
- *SM4 Jat Boy (DOB 27.04.89)31/5'10" B.Tech.in Bio-Medical Engineering. Working in a reputed Master's Medical Company with package of Rs. 16.5 lacs PA. Father businessman. Mother housewife. Avoid Gotras: Jatyan, Duhan, Dagar. Cont.: 9818724242.*

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है। बिल्ड़िग के मजबूत ढ़ांचे/निर्माण के लिये साईट से मिट्टी परीक्षण करवा लिया गया है और बिल्ड़िंग के नक्शे/ड्राईंग पास करवाने के लिये सम्बन्धित विभाग में जमा करवा दिये गये है। इसके अलावा जम्मु प्रशासन व माता वैष्णों देवी साईन बोर्ड कटरा को यात्री निवास साईट पर जरूरी मूल भूत सार्वजनिक सेवायें - छोटे बस स्टैड़, टू-व्हीलर सैल्टर, सार्वजनिक शौचालय, वासरूम, पीने के पानी का स्टाल आदि के निर्माण हेतु पत्र लिखकर निवेदन किया गया है। यात्री निवास स्थल पर ब्लॉक विकास एवं पंचायत अधिकारी (बी.डी.पी.ओ.) कटरा द्वारा सरकारी खर्चे से दो महिला एवं पुरूष स्नानघर व शौचालय का निर्माण किया जा चुका है और पानी के कनैक्शन के लिये भी सरकारी कोष से फंड मंजूर हो गया है और शीघ्र ही पानी की आपूर्ति का कनैक्शन चालू हो जायेगा।

जाट सभा द्वारा यात्री निवास भवन का निर्माण कार्य शीघ्र शुरू करने का प्रयास था लेकिन कोविड़-19 महामारी के कारण निर्माण कार्य शुरू नहीं किया जा सका और इस महामारी का जाट सभा की वित्तीय स्थिति पर भी प्रभाव पड़ा है। जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला यात्री निवास भवन का निर्माण करने पर वचनबद्ध है और शीघ्र ही निर्माण शरू कर दिया जायेगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला जीन्द (हरियाणा), वर्तमान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111/- तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426-427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये की राशि जाट सभा, चण्डीगढ को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही संम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड- एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है।

अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : **डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)**

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : 0172–2654932 2641127

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।